RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

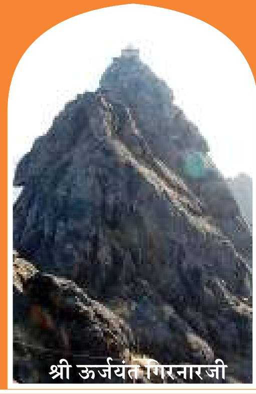

वर्ष : 15	अंक : 1	मुम्बई, अप्रैल 2025	पृष्ठ : 32	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 15	ISSUE : 1	MUMBAI, APRIL 2025	PAGES : 32	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2551

तीर्थंकर श्री 1008 महावीर स्वामी भगवान, पावागढ, गुजरात

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 15 अंक 1 अप्रैल 2025

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादक
श्री उमानाथ रामअजोर दुबे

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2551

इस अंक में

हम भी महावीर बनने की तैयारी करें 7

तीर्थंकर भगवान् महावीर के प्रासंगिक उपदेश 9

मल्लिनाथ भगवान के अतिशय से आच्छादित क्षेत्र तालनपुर-कुक्षी 11

बैर की गाँठ भव भ्रमण कराती है 12

काश मैं महावीर होती ! 13

तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में चंदेरी (म.प्र.) में पत्रकार सम्मेलन का सफल आयोजन संपन्न 21

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें स्थापना वर्ष की तैयारी 29

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

विगत दिनों 22-23 मार्च 25 को मुझे जैन पत्रकार संघ के अधिवेशन में सम्मिलित होने स्वस्तिधाम-जहाजपुर (राजस्थान) जाने का अवसर मिला। सर्वप्रथम मैं पूज्य गणिनी आर्यिका श्री स्वस्तिभूषण माता जी द्वारा इस तीर्थ के विकास हेतु किये गये सतत एवं समर्पित प्रयासों हेतु उनकी वन्दना करता हूँ। मात्र 10 वर्षों की कालावधि में उन्होंने इस नवोदित तीर्थ को एक प्रसिद्ध अतिशय क्षेत्र बना दिया। आज भारत का प्रत्येक आबाल - वृद्ध दि. जैन श्रावक/श्राविका एक बार जहाजपुर अवश्य जाना चाहता है। यहाँ भव्य मन्दिर तथा अतिशय पूर्ण भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी की मूर्ति एवं सुन्दर आवास सुविधायें हैं।

अधिवेशन में पूज्य माता जी ने एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा दी। प्रत्येक बड़े तीर्थ को 5 -6 छोटे तीर्थों को संरक्षण देना चाहिए। यह बात महत्त्वपूर्ण हैं। प्रत्येक तीर्थ हमारी संस्कृति का संरक्षक एवं सांस्कृतिक केन्द्र है। प्रत्येक तीर्थ पर विराजमान जिन बिम्ब, प्राचीन मन्दिर हमारे आराध्य हैं। इनका संरक्षण एवं विकास हमारी साझा जिम्मेदारी हैं। विकसित या बड़े तीर्थों पर भी समाज का ही पैसा हैं। समाज द्वारा श्रद्धा एवं आस्था से दिया गया है अतः वह बड़े तीर्थों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद यदि कुछ अतिरिक्त राशि बचती है तो उसकी बैंक में Fixed Deposite बनवाने के बजाय समीपवर्ती या अंचल के अन्य तीर्थों की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति, जीर्णोद्धार, आवासीय सुविधाओं के विकास, बाउन्ड्रीवाल निर्माण आदि में करते हैं तो उसका लाभ भी समाज को ही मिलेगा। मैं पूज्य माता जी के इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ और आशा करता हूँ कि हमारे बड़े/विकसित तीर्थ इस विषय में पहल करेंगे।

पत्रकार सम्मेलन में पधारे सभी पत्रकार (बंधुओं) से भी मैं अनुरोध करना चाहूँगा कि वेः-

1) अपने - अपने समाचार पत्रों/पत्रिकाओं में छोटे-छोटे तीर्थों के इतिहास, पुरातत्व, अतिशय एवं सुविधाओं आदि को प्रकाशित कर उनका प्रचार करें। इससे वहाँ यात्रियों की आवक बढ़ेगी एवं क्षेत्र की आय बढ़ने पर विकास का पथ प्रशस्त होगा।

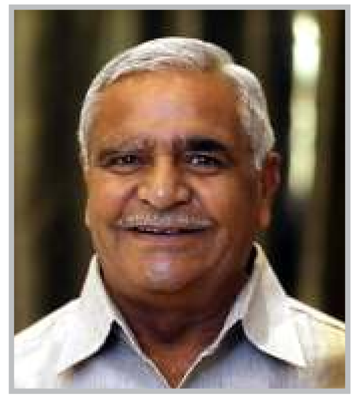

2) स्वयं सपरिवार प्रतिवर्ष अधिकाधिक तीर्थ यात्रायें करें एवं अपने समस्त अनुभवों को प्रचारित करें।

3) यात्रासंघों को नेतृत्व प्रदान करें। यदि आप यात्रासंघ लेकर छोटे तीर्थों पर जायेंगे तो आदर्श स्थापित होगा।

4) हमारे पत्रकार भाइयों के प्रशासकीय सम्पर्क होते हैं अतः तीर्थों की भूमि का रिकार्ड इलेक्ट्रॉनिकली भी दर्ज करावे। जिसमें शासकीय अभिलेखों में वह ठीक से दर्ज हो जायें।

5) तीर्थक्षेत्र कमेटी ने गुल्लक योजना शुरू की है इसका उद्देश्य है कि हमारे हर भाई को यह गौरव करने का अवसर मिले कि हमने भी कमेटी को योगदान दिया है।

पत्रिका के इसी अंक में हमने 23 गुल्लकों से प्राप्त राशि का विवरण प्रकाशित किया है। यदि श्री महावीर जी से आशानुरूप सर्वाधिक राशि मिली है तो एक 20-25 घरों की छोटी सी अमीनगरसराय की समाज से भी गोलक क्रमांक 21 से 40000 से अधिक राशि मिली है। जरूरत इच्छाशक्ति की है। अयोध्या तीर्थ एवं पद्मपुरा जी से भी अच्छी राशि मिली है, सभी को धन्यवाद। हर समाज, अपने मन्दिर मे गोलक रखकर समय से राशि जमाकर तीर्थ विकास में सहभागी बन सकते हैं। शेष गोलकों को खुलवाकर प्राप्त राशि का विवरण भी हम शीघ्र प्रकाशित करेंगें।

एक बार पुनः सभी का आभार एवं महावीर जन्म कल्याणक की शुभकामनाओं सहित।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

बंधुओं, भगनियों

सादर जयजिनेन्द्र,

अत्यंत हर्ष हो रहा है कि भगवान महावीर का जन्मकल्याणक हमने बड़े ही धूम-धाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया है! अब यह हमारा दायित्व है कि भगवान महावीर के सिद्धांतों पर चलते हुए हमें अपने इस मनुष्य जीवन की सार्थकता को समझते हुए अपने जीवन को धन्य और सफल बनाना है साथ ही भगवान महावीर के सिद्धांतों को अपने-अपने स्तर से जन-जन तक पहुँचाने का कार्य भी करना है।

आपको विदित ही होगा कि जैन धर्म के धर्मावलम्बियों के विकास एवं जैन तीर्थों के संरक्षण, विकास आदि के लिए महाराष्ट्र सरकार ने "जैन अल्पसंख्यक आर्थिक विकास महामंडल" का गठन किया है जिसके अंतर्गत "राज्यस्तरीय तीर्थ संरक्षण (तज्ञ) विशेषज्ञ मार्गदर्शक समिति" यह समिति भारत के सभी जैन तीर्थो के संरक्षण-संवर्धन व उनके विकास के लिए समर्पित है इस समिति में मुझे मानद सदस्य के रूप में चयन किया है इस अवसर पर मैं समिति के अध्यक्ष श्री ललित गाँधी एवं समस्त पदाधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी में पिछले करीब एक दशक से जुड़कर मैं पूर्ण तन्मयता के साथ अपनी सेवाएं दे रहा हूँ इस कार्य में मुझे अपने आचार्य-गुरुजनों, आर्यिका माताओं, भट्टारकों आदि तथा तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों, अंचलों के अध्यक्षों, महामंत्रियों एवं समाज के शीर्षस्थ समाज सेवी महानुभावों, तीर्थभक्तों आदि सज्जनों का सम्पूर्ण सहयोग एवं मार्गदर्शन सतत मिलता आ रहा है जिनके प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगा।

पिछले कुछ दिनों से मन में खेद है कि हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन का स्वास्थ अनुकूल नहीं चल रहा है जिस कारण कमेटी की गतिविधियों में उनका प्रत्यक्ष नेतृत्व और मार्गदर्शन हमें नहीं मिल पा रहा है इसी क्रम में उत्तरप्रदेश उत्तरांचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जी जैन भी कुछ दिनों से अस्वस्थ्य हैं मेरी भगवान से प्रार्थना है कि आप दोनों शीघ्र स्वस्थ्य होवें और उसी उर्जा और उत्साह के साथ कमेटी के कार्यों में हमें अपना मार्गदर्शन देते रहें।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गोलक योजना जिसमें विभिन्न प्रान्तों के दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों, मंदिरों के पदाधिकारियों, ट्रस्टियों ने आगे आकर कमेटी की गोलक योजना को गति देने का कार्य किया है। गत वर्ष कमेटी की ओर से रखवाई गयी गोलकों की अधिकांश गोलकें खोली गयी हैं जिनसे प्राप्त राशियाँ कमेटी के सेविंग खाते में भी जमा करवा दी गयी हैं जिनकी सूची इस अंक में प्रकाशित है।

मैं उपरोक्त सभी क्षेत्रों, मंदिरों के पदाधिकारियों, ट्रस्टियों के प्रति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ आप सबका इसी प्रकार सतत सहयोग कमेटी को बना रहेगा। साथ ही भारत के समस्त दिगम्बर जैन तीर्थों, मंदिरों के पदाधिकारियों, ट्रस्टियों से अपील है कि अभी तक जहाँ-जहाँ कमेटी की गोलक नहीं रखवाई गयी है कृपया आप भी अपने-अपने क्षेत्र, मंदिर जी पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की एक गोलक अवश्य रखवाएं, जिनसे तीर्थों की सेवा-संभाल में जन-जन की भागी दारी रहे। आपसे प्राप्त सहयोग कमेटी प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन एवं उनके विकास के कार्य में ही व्यय करती है।

मंगल शुभकामनाओं के साथ,

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

इन्दौर में श्रमण महाकुम्भ

बींसवी शताब्दीं ईसवीं में जैन समाज की सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र रहीं म.प्र. की आर्थिक राजधानी, मालवा का गौरव इन्द्रपुरी नगरी - इन्दौर आज सम्पूर्ण देश में पुनः चर्चित है। प्रसंग है समाधिस्थ गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के सुशिष्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के पट्टाचार्य महोत्सव का। गतवर्ष 04 जुलाई 24 को समाधि से पूर्व गणाचार्य श्री विरागसागर जी ने अपने सर्वाधिक प्रभावी, एवं बहुश्रुत वरिष्ठ शिष्य, शताब्दी देशनाकार आचार्य श्री विशुद्धसागर जी को अपने विशाल संघ का पट्टाचार्य/उत्तराधिकारी मनोनीत कर दिया था। तब से इस ऐतिहासिक महोत्सव की संकल्पना शुरू हो गई थी। तिथि एवं स्थान को लेकर अनेक चिन्तन चले एवं अन्ततोगत्वा इस महोत्सव हेतु ऐतिहासिक नगरी इन्दौर एवं अक्षय तृतीया की पावन तिथि का चयन किया गया अर्थात् 30-04-25 की तारीख पट्टाचार्य पदारोहण हेतु निर्धारित की गई।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज

गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से दीक्षित 350 से अधिक संत (आचार्य, उपाध्याय, मुनि, गणिनी, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका) एवं शताधिक व्रती भाई बहनों में से अधिकांश की एक साथ उपस्थिति एवं पूज्य गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज तथा आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज की पावन सान्निधि से इन्दौर धन्य होने जा रहा हैं। इन्दौर के चतुर्दिक विभिन्न नगरों/तीर्थों पर संतों का आगमन तो प्रारंभ हो ही चुका है।

इन्दौर में भी लगभग 50 संतों का आगमन होने से वातावरण धर्ममय होने लगा है। सर्वप्रथम आने वाले संघों में उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज का संघ है। पूज्य मुनि श्री आदित्य सागर जी महाराज अपने दोनों संघस्थ मुनिराजों मुनि श्री अप्रमितसागर जी एवं मुनि श्री सहजसागर जी आदि के साथ संघों के स्वागत एवं कार्यक्रम की रूपरेखा के निर्माण हेतु मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

गतवर्ष मार्च 2024 में सुमतिधाम, इन्दौर में भव्य एवं अभूतपूर्व पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुई थी। इस पंचकल्याणक की अनुगूंज पूरे विश्व में हुई थी। अब 27 मई से 2 जून के मध्य इस इतिहास को और भी भव्य रूप में दुहराया जायेगा। 65 एकड़ के विशाल परिसर में सभी व्यवस्था अद्वितीय रूप से की जा रही है।

इस ऐतिहासिक विशिष्ट आयोजन हेतु 20,000 श्रावक/श्राविकाओं के बैठने की क्षमता वाला देशना मण्डप बनाया गया है जो वातानुकूलित होगा। 25-25 हजार की क्षमता वाली 4 भोजन शालाऐं होगी। त्यागीव्रती महानुभावों के लिए 5000 की क्षमता वाली एक स्वतंत्र भोजनशाला बनाई गई है। 360 चौकों में संतों के आहार होंगें

जिससे किसी को कोई असुविधा नही होगी। इस कार्यक्रम में दक्षिण का प्रतिनिधित्व करने अनेक पू. भट्टारक स्वामीगण भी पधार रहे है।

यों तो आज भी सुमतिधाम इन्दौर आने वाले सभी श्रावक बन्धुओं के आकर्षण का केन्द्र है। यहाँ के निर्माणों की गुणवत्ता एवं कलात्मकता से यह कलातीर्थ तो बन ही गया है किन्तु इस महोत्सव में लगभग 350 संतों की चरणरज से पवित्र होकर यह अतिशय क्षेत्र बन जायेगा।

युवा दम्पत्ति श्री मनीष-सपना गोधा ने न्यायोपार्जित स्वद्रव्य का सदुपयोग कर इस तीर्थ का निर्माण किया है एवं वहाँ इतने जीवन्त तीर्थ (दिगम्बर संतों) को आमंत्रित कर श्लाघनीय कार्य किया है। हम ऐसे धर्मनिष्ठ युवा श्रावक दम्पत्ति का अभिनन्दन करते हैं। इन सदृश गुरुभक्त, तीर्थभक्त श्रावकों के अवदानों से दिगम्बरत्व का गौरव बढ़ता है।

सुमतिधाम के मूलनायक श्री सुमतिनाथ जी भगवान

पूज्य आचार्य श्री भी संतवाद, पंथवाद की भावनाओं से उपर उठकर जिनवाणी का प्रवचन करतें हैं। यही नीति हमारे तीर्थों के संरक्षण एवं विकास हेतु जरूरी है यदि हम तीर्थों को पंथवाद के पचड़े में डाल देंगे तो हम खण्डित हो जायेंगे। तीर्थ हमारी साझी विरासत हैं। दिगम्बरत्व की शान हैं। हमें अगली पीढ़ी को ये सभी तीर्थ विकसित एवं सुरक्षित रूप में सौंपने हैं। श्री गोधा जी ने इस आयोजन के मध्य 11 वरिष्ठ विद्वानों को आमंत्रित कर जिनवाणी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। विद्वानों का भी कर्त्तव्य है कि वे संकीर्णताओं से ऊपर उठकर चल-अचल तीर्थों के संरक्षण की अपनी जिम्मेदारी निभायें, समाज का मार्गदर्शन करें। आज भी समाज में विद्वानों के प्रति बहुमान हैं। इस कार्यक्रम की सफलता के प्रति पूर्ण आश्वस्त होते हुए मैं कार्यकर्ताओं को अग्रिम शुभकामनाये देता हूँ एवं महोत्सव में पधारे समस्त पूज्य आचार्यों, उपाध्यायों, मुनिराजों, आर्यिका माताओं, को नमन/वन्दन करता हूँ। समस्त ऐलक, क्षुल्लक, क्षुल्लिका माताओं को इच्छामि।

दिगम्बरत्व का वैभव, दिगम्बर साधु की चर्या देखनी है तो इन्दौर पधारिये एवं देखिये श्रमणों का महाकुम्भ।

अभी तक श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) में ही इतनी बडी श्रमण संगीति देखने को मिलती थी किन्तु अब उत्तर भारत के इन्दौर में भी देखने को मिलेगी। यहाँ का दृश्य न भूतो न भविष्यति। आपके आगमन की प्रतीक्षा में :-

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009
(म.प्र.) मो.: 94250 53822

सुमतिधाम का भव्य जिन मंदिर

हम भी महावीर बनने की तैयारी करें

-डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

जैन परम्परा में 24 तीर्थंकर हुए हैं। वर्तमान कालीन 24 तीर्थंकरों की श्रृखंला में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव और 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। भगवान महावीर के जन्म कल्याणक को देश-विदेश में बड़े ही उत्साह के साथ पूरी आस्था के साथ मनाया जाता है।

भगवान महावीर को वर्द्धमान, सन्मति, वीर, अतिवीर के नाम से भी जाना जाता है। ईसा से 599 पूर्व वैशाली गणराज्य के कुण्डलपुर में राजा सिद्धार्थ एवं माता त्रिशला की एक मात्र सन्तान के रूप में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को आपका जन्म हुआ था। महावीर पूजा में लिखा है-

जनम चैत सित तेरस के दिन, कुण्डलपुर कन वरना।
सुरगिरि सुरगुरु पूज रचायो, मैं पूजौं भवहरना।।

30 वर्ष तक राजप्रासाद में रहकर आप आत्म स्वरूप का चिंतन एवं अपने वैराग्य के भावों में वृद्धि करते रहे। 30 वर्ष की युवावस्था में आप महल छोड़कर जंगल की ओर प्रयाण कर गये एवं वहां मुनि दीक्षा लेकर 12 वर्षो तक घोर तपश्चरण किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पदविहार कर आपने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्म का उपदेश दिया। ईसा से 527 वर्ष पूर्व कार्तिक अमावस्या को उषाकाल में पावापुरी में आपको निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त हुआ।

महावीर जयंती हम प्रतिवर्ष मानते हैं, एकबार स्वयं महावीर के रास्ते पर चलने का यदि संकल्प ले लिया तो हम स्वयं महावीर बनने की ओर कदम बढ़ा लेंगे। इसलिए जरूरी है कि हम में से हर व्यक्ति महावीर बनने की तैयारी करे, तभी सभी समस्याओं से मुक्ति पाई जा सकती है। भगवान महावीर वही व्यक्ति बन सकता है, जो लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित हो, जिसमें दुःख-कष्टों को सहने की क्षमता हो। जिसको प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संतुलन बनाना आ गया वह महावीर बन सकता है। आज की भागमभाग के जीवन में सुख-शांति की खोज महावीर के पथ से प्राप्त हो सकती है। जिसके मन मस्तिष्क में प्राणिमात्र के प्रति सहअस्तित्व की भावना हो। जो पुरुषार्थ के द्वारा अपना भाग्य बदलना जानता हो वह महावीर बन सकता है।

भगवान महावीर ने अपनी देशना में मानव के लिए उपदेश दिया कि धर्म का सही अर्थ समझो। धर्म तुम्हें सुख, शांति, समृद्धि, समाधि -यह सब आज देता है या बाद में -इसका मूल्य नहीं है। मूल्य इस बात का है कि धर्म तुम्हें समता, ईमानदारी, सत्य, पवित्रता, नैतिकता, स्याद्वाद, अपरिग्रह और अहिंसा की अनुभूति कराता है या नहीं। महावीर का जीवन हमारे लिए इसलिए महत्वपूर्ण है कि उसमें धर्म के सूत्र निहित हैं। आज महावीर के पुनर्जन्म की नहीं, बल्कि उनके द्वारा जीये गए मूल्यों के पुनर्जन्म की अपेक्षा है। जरूरत है हम बदलें, हमारा स्वभाव बदले और हम हर क्षण महावीर बनने की तैयारी में जुटें, तभी महावीर जयंती मनाना सार्थक होगा।

महावीर बनने की कसौटी है- देश और काल से निरपेक्ष तथा जाति और संप्रदाय की कारा से मुक्त चेतना का आविर्भाव। भगवान महावीर एक कालजयी और असांप्रदायिक महापुरुष थे, जिन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत को तीव्रता से जीया।

भगवान महावीर की मूल शिक्षा है- अहिंसा। अहिंसा का सीधा अर्थ यह है कि व्यावहारिक जीवन में हम किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं, किसी प्राणी को अपने स्वार्थ के लिए दुख न दें। दूसरे व्यक्तियों से ऐसा व्यवहार करें जैसा कि हम उनसे अपने लिए अपेक्षा करते हैं।महावीर का दूसरा व्यावहारिक संदेश है- क्षमा। उन्होंने कहा कि मैं सभी से क्षमा याचना करता हूं। मुझे सभी क्षमा करें। मेरे लिए सभी प्राणी मित्रवत हैं। मेरा किसी से भी वैर नहीं है।व्यावहारिक जीवन में यह आवश्यक है कि हम अहंकार को मिटाकर शुद्ध हृदय से बार-बार ऐसी क्षमा प्रदान करें। हमारा जीवन धन्य हो जाए यदि हम

भगवान महावीर के इस छोटे से उपदेश का ही सच्चे मन से पालन करने लगें कि संसार के सभी छोटे-बड़े जीव हमारी ही तरह हैं, हमारी आत्मा का ही स्वरूप हैं।

भगवान महावीर का आदर्श वाक्य था -'मित्ती में सव्व भूएसु' अर्थात सब प्राणियों से मेरी मैत्री है।

आज जरूरत इस बात की है कि शत्रुता का अंत हो जाए और विश्व में शांति स्थापित हो, क्योंकि बैर से बैर कभी नहीं मिटता। मैत्री और करुणा से ही मानव के मन में, घर में, नगर और देश तथा विश्व में शांति और सुख , अमनचैन की धारा बहती है। इसके लिए हमें भगवान महावीर बनने की दिशा में कदम बढ़ाना होगा। भगवान महावीर की शिक्षाओं में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास, युद्ध और आतंकवाद के जरिए हिंसा, धार्मिक असहिष्णुता तथा गरीबों के आर्थिक शोषण जैसी सम-सामयिक समस्याओं के समाधान पाए जा सकते हैं।

भगवान महावीर ने 'अहिंसा परमो धर्मः' का शंखनाद कर 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' की भावना को देश और दुनिया में जाग्रत किया। 'जियो और जीने दो' अर्थात् सह-अस्तित्व, अहिंसा एवं अनेकांत का नारा देने वाले महावीर स्वामी के सिद्धांत विश्व की अशांति दूर कर शांति कायम करने में समर्थ है।

अतः यदि आज भगवान महावीर के सर्वोदयी सिद्धांत, अनेकान्तात्मक विचार, सभी पक्षों को अपने में समाहित कर लेने वाली स्याद्वाद वाणी, अहिंसा युक्त आचरण और अल्प संग्रह से युक्त जीवनवृत्ति हमारे सामाजिक जीवन का आधार व अंग बन जाये तो हमारी बहुत सी समस्यायें सहज ही सुलझ सकती हैं। अतएव हम विश्व शांति के साथ-साथ आत्म शांति की दिशा में भी सहज अग्रसर हो सकते हैं। इस महावीर जयंती हम उनके चरण छूने के साथ ही आचरण भी छूने का प्रयास करें, तभी महावीर जयंती मनाने की सार्थकता है।

"यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय कल्लोल-विमला,
वृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुध-जनमरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥"

तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण एवं विकास हेतु गुल्लक योजना को उत्साह वर्धक प्रतिसाद

श्री पदमपुरा जी, श्री अयोध्या जी, श्री अहिक्षेत्र, कविनगर गाजियाबाद, शामली, नैनागिर, एवं दिल्ली आदि अनेक क्षेत्रों की गुल्लक खोली गई

तीर्थों के सर्वांगीण विकास, सरक्षण, जीर्णोद्धार आदि अनेक कार्य पिछले 123 वर्षों से भरत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर रही है। 2027 में कमेटी के गौरवपूर्ण 125 वर्ष पूर्ण हो रहे है । इसी मंगल उद्देश्य हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी ने सम्पूर्ण भारत के तीर्थक्षेत्रों एवं मंदिरों में गुल्लक रखने का निर्णय लिया एवं अनेक मंदिरों एवं तीर्थों में गुल्लक रखी गई । तीर्थ भक्तों एवं सुश्रावकों द्वारा अपनी चंचला लक्ष्मी का तीर्थों के विकास हेतु सदुपयोग करते हुए गुल्लक में राशि समर्पित की।

श्री पदमपुरा जी, श्री अयोध्या जी, श्री अहिक्षेत्र, कविनगर गाजियाबाद, शामली, नैनागिर, एवं दिल्ली, अमीननगरसराय आदि अनेकों मंदिरों की गुल्लक खोली गई जिनसे प्राप्त राशि कमेटी के खाते में जमा कराई गयी हैं। समस्त उदार भक्तों का आभार।

निवेदन - कृपया अपने क्षेत्र के मंदिर में गुल्लक स्थापित करने हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी के मुंबई कार्यालय 98204 30114, 98336 71770 या कैंप कार्यालय गाजियाबाद 7217756871 से संपर्क करे।

हसमुख जैन गांधी
चेयरमैन गुल्लक योजना समिति

तीर्थंकर भगवान् महावीर के प्रासंगिक उपदेश

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती, बुरहानपुर

चौबीसवें तीर्थंकर श्री भगवान् महावीर स्वामी का जन्म वैशाली-कुण्डग्राम (म.प्र.) 599 ईसा पूर्व में हुआ था। यह वह समय था जब राष्ट्र अशान्त था, पशुबलि और नरबलि का बोलबाला था। यज्ञ में की गयी हिंसा को धर्म माना जाता था। दास प्रथा चल रही थी। मनुष्यों का भी क्रय-विक्रय होता था। ऐसे समय में तीर्थंकर के रूप में भगवान् महावीर स्वामी का उदय ज्येष्ठ की ग्रीष्म में प्यासे जनों को आषाढी मेघ की शीतल बूँदों के समान उपयोगी जैसा हुआ। जन्म के अतिशय के अनुरूप उनका जन्म होते ही तीन लोक में एक क्षण के लिए शांति का साम्राज्य स्थापित हो गया। परस्पर वैर-विरोध शांत हो गया। छह ऋतुओं के फलफूल एक साथ प्रकट हो गये। चारों ओर सुभिक्ष फैल गया। शीतल-मंद- सुगंधित पवन चलने लगी। यह सब यह बताने के लिए प्रकृति ने उपक्रम किया कि महापुरुष/तीर्थंकर के रूप में भगवान् महावीर का जन्म सभी के लिए सुख-शांतिदायक है।

तीर्थंकर महावीर स्वामी ने तीस वर्ष तक गृहस्थ जीवन जिया। उन्होंने विवाह न कर आजीवन ब्रह्मचर्य-शील व्रत के पालन का निश्चय किया। अनन्तर तीस वर्ष की अवस्था में समस्त राजभोगों का त्याग कर पंचमुष्टि केंशलोंच कर निर्वस्त्र दिगम्बर हो साधना पथ अपनाया। राजा कूल के यहाँ उनका प्रथम आहार हुआ। अनन्तर उन्होंने बारह वर्ष घोर तप किया फलस्वरूप चार अघातिया कर्मों का नाश कर केवलज्ञान (सर्वज्ञत्व) प्राप्त किया।

केवलज्ञान प्राप्ति के उपरान्त छयासठवें दिन इन्द्रभूति गौतम ने अपने ५०० शिष्यों सहित तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी के समवशरण में मिथ्यात्व का त्याग कर प्रवेश किया और मुनिदीक्षा अंगीकार कर गुरु रूप में भगवान् महावीर को प्राप्त किया। तभी से गुरुपूर्णिमा पर्व प्रचलन में आया। श्रावण कृष्ण प्रतिपदा के दिन तीर्थंकर महावीर की दिव्यध्वनि खिरी जिसे हम सब वीरशासन दिवस के रूप में याद करते हैं।शासन का अर्थ उपदेश है। वह उपदेश हमें तीर्थंकर महावीर से प्राप्त हुआ इसे ही हम दिव्य ध्वनि, वीर ध्वनि, आर्हत्वाणी या जिनवाणी के नाम से जानते हैं और उसका अनुकरण करते हैं।

तीर्थंकर महावीर की दिव्य ध्वनि के प्रमुख सूत्र इस प्रकार हैं-

१. आत्मा त्रैकालिक शुद्ध है किन्तु कर्मों का आवरण होने के कारण वह अशुद्ध है। अत: आत्मा की शुद्धता के लिए कर्मों से मुक्त होने का प्रयत्न-पुरुषार्थ करो।

२. संसार में रहते हुए आचरण की पवित्रता आवश्यक है। इससे तुम्हें सांसारिक सुख की प्राप्ति होगी।

३. संसार से मुक्ति के लिए आत्महित को लक्ष्य बनाकर तप करना चाहिए।

४. चार पुरुषार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कहे गये हैं। इनमें से अर्थ और काम संसार सूचक हैं किन्तु धर्म और मोक्ष आत्म साधक हैं। अर्थ को भी परोपकार, दान आदि में लगाकर पुण्य संचय कर परम्परा से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। काम पुरुषार्थ का लक्ष्य भोग नहीं अपितु सन्तान उत्पत्ति है। भोग के लिए भोग अपनी शक्ति का अपव्यय है। भोग के स्थान पर योग को अपनाना चाहिए।

५. पाँच महाव्रत-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य कहे गये हैं। ये मानव जीवन को नियंत्रित करते हैं। बुराईयों से बचाते हैं और आत्मा की शुद्धि करते हैं। इसलिए इन व्रतों का पालन करना चाहिए। यदि अहिंसा के स्थान पर हिंसा, सत्य के स्थान पर असत्य, अस्तेय के स्थान पर चोरी, अपरिग्रह के स्थान पर परिग्रह और ब्रह्मचर्य के स्थान पर कुशील की प्रवृत्ति करते हैं तो निश्चित मानिये कि आप अपनी ही निगाहों में पतित होते हैं, समाज में लज्जित होते हैं और न्याय के द्वारा दंडित होते हैं। राजदंड या न्यायदंड ऐसे ही लोगों के लिए है।

६. विचार धारा के स्तर पर हमें अनेकान्तवाद को अपनाना चाहिए। यह अनेकान्तवाद विरोधी विचारों के बीच समन्वय का मार्ग है।

विचारों के मंथन से जो नवनीत निकलता है वह सत् होता है, श्रेष्ठ होता है। एकान्तिक विचारधारा दृष्टि दोष की तरह है। इससे बचना चाहिए।

७. संसार में दो प्रकार के जीव हैं- त्रस और स्थावर। दो इन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के जीव त्रस कहलाते हैं और एक इन्द्रिय वाले जीव स्थावर कहलाते हैं। ये पाँच हैं- पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक। इनकी हिंसा में सबसे अधिक दोष लगता है। अत: पृथिवी का संरक्षण करें, जल का संरक्षण करें, अग्नि का संरक्षण करें, वायु को प्रदूषण से बचायें और वनस्पति-पेड़ पौधों को लगायें और उनका संरक्षण करें। मानवों के लिए वस्त्र और खानपान तथा प्राणवायु की व्यवस्था ये वनस्पतियां ही करती हैं अत: इनका अतिदोहन नहीं करना चाहिए। अपितु आवश्यकता अनुसार उपयोग करना चाहिए।

८. सात तत्त्व-जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष कहे गये हैं। इनके सही स्वरूप को समझकर जीव रक्षण अर्थात्आत्मा की रक्षा का उपाय करना चाहिए।

९. मोक्ष आत्मा के लिए शाश्वत सुख का स्थान है। उसे तप, त्याग, योग और ध्यानपूर्वक आठ कर्मों का नाश कर प्राप्त किया जाता है। अत: हमारे लिए यही उपादेय है।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार- वर्धमान महावीर गौतम बुद्ध की भांति नितांत ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। माता-पिता के द्वारा उन्हें भी हाड़-मांस का शरीर प्राप्त हुआ था। अन्य मानवों के भांति वे भी कच्चा दूध पीकर बढ़े थे किन्तु उनका उदात्त् मन अलौकिक था। तम और ज्योति, सत्य और असत्य के संघर्ष में एक बार जो मार्ग उन्होंने स्वीकार किया उस पर दृढता से पैर रखकर हम उन्हें निरंतर आगे बढते हुए देखते हैं। उन्होंने अपने मन को अखंड ब्रह्मचर्य की आंच में जैसा तपाया था , उसकी तुलना में रखने के लिए अन्य उदाहरण कम ही मिलेंगे। जिस अध्यात्म केन्द्र में इस प्रकार की सिद्धि प्राप्त की जाती है, उसकी धाराएं देश और काल पर अपना निस्सीम प्रभाव डालती हैं। महावीर का प्रभाव आज भी अमर है।

आज वैश्विक शांति के लिए, युद्धों से मुक्ति के लिए तीर्थंकर महावीर का अहिंसा दर्शन अपनाने की अनिवार्य आवश्यकता है। इसीलिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रत्येक दो अक्टूबर को विश्व अहिंसा दिवस मनाने का निर्णय लिया है। यह प्रासंगिक कदम है। नर और नारी के प्रति समान व्यवहार, समान अवसर की दृष्टि से भगवान् महावीर ने जिस प्रकार चन्दनबाला को बंधन मुक्त किया वह नारी चेतना की दृष्टि से प्रासंगिक है। संसार का सबसे बड़ा दर्शन महावीर दर्शन है जिसमें अपनी न्यायोपार्जित सम्पत्ति को भी स्वेच्छा से दान कर अपरिग्रह वृत्ति को अपनाया जा सकता है। शील-ब्रह्मचर्य का पालन समाज में नारी एवं पुरुष के सम्मान से जुड़ा है। अत: आवश्यक है। इस तरह हम तीर्थंकर महावीर के सिद्धान्तों को प्रासंगिक मानकर अपने आप को श्रेष्ठ मानव बना सकते हैं।

श्रद्धांजलि

इन्दौर के सपूत - जो साथ छोड़ गये

पं. श्री जयसेन जी जैन

1937 - 2025

सन्मतिवाणी के सम्पादक — मूलत: अलीगढ़ (उ.प्र.) के निवासी पल्लीवाल दिगम्बर जैन धर्मावलम्बी बाबूजी पं. जयसेन एक धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी लेखक एवं पत्रकार थे। आपने म.प्र. शासन की १९५५ से १९९५ तक शिक्षक के रूप में सेवा की तथा प्रधान पाठक (प्राचार्य) के रूप में सेवानिवृत्त हुए। आपने १९८१ से २०२३ तक सन्मतिवाणी का कुशल सम्पादन कर एक ओर संहिताचार्य पं. नाथूलाल जी शास्त्री की विरासत को सम्भाला तो दूसरी ओर सन्मतिवाणी को राष्ट्रीय ख्याति दिलाई।

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव के अवसर पर मध्य क्षेत्र के धर्मचक्र का सफल प्रवर्तन कर तत्कालीन उपराष्ट्रपति से सम्मान पाया एवं संकलित धनराशि से महावीर ट्रस्ट का गठन किया गया। भगवान बाहुबली स्थापना सहस्त्राब्दि महोत्सव के अवसर पर जनमंगल महाकलश का प्रवर्तन भी आपके निर्देशन में हुआ।

एम.ए.(हिन्दी), बी.एड, साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न की उपाधियॉं प्राप्त करने के उपरांत आपने मध्यप्रदेश शासन शिक्षा विभाग की खुब सेवा की। अनेक सामाजिक धार्मिक संस्थाओं की निस्पृह सेवा करने वाले पंडित जी १७ मार्च को ब्रह्म मुहुर्त में इस संसार को अलविदा कर गये।

आपकी बहुआयामी गतिविधियों एवं अवदानों को संरक्षित रखने हेतु एक स्मृतिग्रंथ के प्रकाशन का निर्णय किया गया हैं। ग्रंथ का प्रकाशन एक प्रकाशन समिति द्वारा किया जायेगा जिसका गठन इंदौर के वरिष्ठ समाज सेवियों को मिलाकर किया गया है। प्रधान संपादक का दायित्व डॉ. अनुपम जैन को दिया गया है। सम्पादक मण्डल में नगर के प्रबुद्ध सम्पादक गण सम्मिलित हैं।

इंजी. कैलाश वैद
सम्पादक

मल्लिनाथ भगवान के अतिशय से आच्छादित क्षेत्र तालनपुर–कुक्षी के दर्शन अवश्य करें

– राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

जैन इतिहास की समृद्ध परम्परा के दर्शन मध्यप्रदेश सहित संपूर्ण भारतवर्ष में मिलते है। मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध तीर्थ बावनगजा की प्राकृतिक सुंदरता और ८४ फीट उत्तुंग प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवजी के अपूर्व अतिशय से आच्छादित संपूर्ण निमाड़ और रेवा नर्मदा का तट सांस्कृतिक विविधताओं से भरपूर है।

सिद्धक्षेत्र बावनगजा से ३५ किमी. की दूरी पर कुक्षी नगर से ३ किमी दूर खण्डवा–बड़ौदा राजमार्ग पर अतिशय क्षेत्र तालनपुर–कुक्षी स्थित है। तीर्थ अनेक अतिशयों से सुविख्यात है।

तीर्थंकर मल्लिनाथजी की पॉंच अद्‌भुत प्रतिमाएं :

क्षेत्र पर विगत ४० वर्षों से सेवाएं प्रदान कर रहे श्री ज्ञानचंदजी जैन से हुई चर्चा में उन्होंने बताया कि वीर निर्वाण संवत १८९८ की घटना

है जब खेत में एक किसान का हल अटक गया, बहुत परिश्रम के बाद भी उस हल को निकाल नहीं सका, थक हारकर किसान सो गया। सोते समय उसे स्वप्न आया कि भूमि की खुदाई करों, किसान ने भूमि की खुदाई की तो पाया कि यहां तो मूर्तियां है, उसे १३ प्रतिमाएं प्राप्त हुई। यह समाचार समीपस्थ जैन समाजजन सुसारी–कुक्षी को मिला। दिगम्बर–श्वेताम्बर जैन समाज ने आपसी सामंजस्य से पॉंच बड़ी प्रतिमाएं दिगम्बर जैन समाज को व छोटी आठ प्रतिमाएं श्वेताम्बर जैन समाज में बांट ली।

अन्यत्र नहीं गई प्रतिमाएं :

दोनों समुदाय प्रतिमाएं अपने–अपने ग्रामों में ले जाने हेतु बैलगाड़ी पर रखी लेकिन उनके प्रयास असफल हुए और दोनों समुदायों ने तालनपुर कुक्षी में ही मंदिर बनाने का निश्चित किया। दिगम्बर जैन समाज का भव्य विशाल मंदिर खण्डवा–बडौदा राजमार्ग पर ही स्थित है जहां मूलनायक श्री मल्लिनाथ भगवान सहित मल्लिनाथ भगवान की प्राचीन प्रतिमाएं जिन पर संवत १३३५ उल्लेख है। पद्मासन में विराजमान प्रतिमा साढ़े तीन फीट ऊंची है। प्रतिमा के पाषाण का रंग अलग ही है जिसे दर्शन कर ही महसूस किया जा सकता है। अतिशयकारी तीर्थ पर अत्यंत शांति

व सभी व्यवस्थाएं मौजूद है।

तालनपुर आईये – दाल पानिये खाईये

मंदिर के सामने ही धर्मशाला व भोजनशाला निर्मित है। राजमार्ग से गुजरते समय ठहरने के लिए सर्वसुविधा युक्त कमरें व सुस्वादु भोजन वाली भोजनशाला संचालित है। मूलतः आदिवासी क्षेत्र में स्थित यह इलाका दाल–पानिये के लिए प्रसिद्ध है। दाल–पानिये, दाल–बाटी जैसा भोजन है जिसमें तुअर की दाल के साथ पानिये बनाये जाते है जो मक्का के आटे के होते है व इन्हें विशेषरुप से हरे पत्तों में रखकर सिकाई की जाती है। सफेद मक्का से बने पानिये व दाल अत्यंत स्वादिष्ट व्यंजन है जिन्हें एक बार जरुर खाना चाहिए।

क्षेत्र कमेटी ने यात्रियों की सुविधा हेतु सर्वसुविधा युक्त

भोजनशाला का निर्माण कराया है जहां पूर्व सूचना पर भोजन की शानदार व्यवस्था उपलब्ध है । आप अपने आगमन की सूचना ९९७७११३२१० (ज्ञानचंदजी), ९७५२१८६१८८ (मोहित) पर कर सुविधाओं का लाभ उठा सकते है ।१००८ मल्लिनाथ भगवान दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र तालनपुर कमेटी के अध्यक्ष पारस गंगवाल पिपलिया (९७५२९३१५००), उपाध्यक्ष मुकेश बड़जात्या कुक्षी, महामंत्री अक्षय अतुल पाटनी कुक्षी (९८९३७१३४१५), कोषाध्यक्ष पवनकुमार कासलीवाल लोहारी, मंत्री अजीतकुमार जैन सुसारी, मुख्य समन्वयक मनीष सेठी, कुक्षी, सहसमन्वयक रंजनकुमार पहाडिया, सुसारी सहित समस्त कमेटी तालनपुर के विकास के लिए सक्रिय व समर्पित है ।

निमाड़ के वरिष्ठ समाजसेवी, एडव्होकेट श्री राजप्रकाश पहाडिया कुक्षी ने बताया कि तालनपुर एक अद्‌भुत चमत्कारिक तीर्थ है । यहां के अतिशय से क्षेत्र की जनता लाभान्वित है । पूज्य मल्लिनाथजी के दर्शन कर समाजजन लाभ ले तीर्थ विकास में सहयोगी बनें ।

बैर की गाँठ भव भ्रमण कराती है

- डॉ नरेंद्र जैन भारती सनावद

संसार में रहने वाला जीव चारों गतियों (नरक गति, तिर्यंच गति, मनुष्य गति और देव गति) में जन्म धारण करने पर किसी न किसी कारण से दु:खी रहता है। मनुष्य गति में जन्म लेने वाला मानव ही ऐसा प्राणी है जो धर्म धारण कर सांसारिक दु:खों से छुटकारा पाकर पारलौकिक सुख प्राप्त कर सकता है। "धर्म धारण कर जीवन जीने की कला" सीख सकता है, यदि व्यक्ति अपने विचारों में बदलाव लाते हुए धर्म सम्मत भावनाओं से अपने को जोड़े। धर्म यह बताता है कि हमारे जीवन में आज जो भी दु:ख आ रहे हैं या विपरीत परिस्थितियाँ निर्मित हो रही हैं वह हमारे द्वारा पूर्व में किए गए अशुभ और बुरे कर्मों का ही परिणाम है। यदि आप चाहते हैं कि दु:खों से छुटकारा मिले तो यह विचार क्रियान्वित करें कि मैं किसी भी जीव के दिल को नहीं दुखाऊँगा और न कभी जीव हिंसा करूँगा। किसी के प्रति मन, वचन और काय से ऐसा कार्य नहीं करूँगा जिससे उसे दुख पहुचे। जैन दर्शन बताता है कि मन की गाँठ बड़ी खतरनाक होती है।शरीर में यदि गाँठ बन जाती है तो उसे सर्जरी करके निकाला जा सकता है क्योंकि डॉक्टर उसकी जाँच कर योग्य उपाय से उसे ठीक कर देता है लेकिन मन की गाँठ अदृश्य होती है उसे मात्र वही व्यक्ति जान सकता है जो मन में गाँठ बाँध लेता है और उसे क्रियान्वित करने के लिए निरंतर तत्पर रहता है। यह मन की गाँठ ही व्यक्ति को भव भ्रमण कराती है, हमारा जीवन खराब कर देती है।अतः मनुष्य का यह कर्तव्य बनता है कि किसी के प्रति शत्रुता की गाँठ मन में न रखें। राग, द्वेष की प्रवृत्ति से अपने आप को दूर रखें और अंतर्मन के मनोभावों को विकृत न बनावें।

जिन्होंने हमारे ऊपर उपकार किया है, सहयोग किया है, सुख-दु:ख के साथी रहे हैं उनके प्रति मैत्री भाव रखें परन्तु विपरीत वृत्ति वालों के प्रति बैर भाव न रखें यदि ऐसा होगा तो हम सभी को आत्मिक सुख शांति मिलेगी। कहा भी गया है-

हे देव मेरी आत्मा धारण करे नित नेम को,
मैत्री रहे सब प्राणियों से गुणी जनों से प्रेम को।
उन पर कृपा करती रहे जो दु:ख भाव गृहीत हैं,
उनसे संबंधित भाव हूं जो वृत्ति में विपरीत हैं।

धर्म शत्रुता नहीं अपितु प्रेम की शिक्षा देता है। धर्म प्रेम सद्भावना और भाईचारे की भावना को बढ़ाता है। अहिंसा, करुणा और सद्भावना की शिक्षा देने वाला धर्म ही सच्चा धर्म है क्योंकि उससे बैर भाव समाप्त होता है और जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। सच्चे धर्मात्मा कभी बैर विरोध का भाव रखकर धर्म प्रचार नहीं करते। संप्रदाय और पंथवाद की चिंता किए बिना धार्मिक समभाव में विश्वास रखते हैं।अहिंसा प्रधान सभी धर्म में विश्वास रखने वालों को अहिंसा को अपना कर दु:खों से मुक्त होना चाहिए क्योंकि अहिंसा के पालन करने वाला ही आत्म कल्याण कर सकता है।

काश मैं महावीर होती !

डॉ.रूचि अनेकांत जैन,नई दिल्ली

ईसा से छह सौ साल पहले इस धरती पर जब चारों तरफ धर्म क्षेत्र में भगवानों की होड़ लगी थी ,और लगभग हर धर्म के भगवान् यह घोषणा कर रहे थे कि तुम्हारी रक्षा तभी हो सकती है ,जब तुम हमारी शरण में आ जाओ। मेरे भक्त बन जाओ। भक्तों ! मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।

ऐसे विपरीत समय में वैशाली की धरती से एक राजकुमार उठता है और सम्पूर्ण राजपाट का त्याग कर वैराग्य धारण कर मुनि बनकर सत्य की खोज करता है और वस्तु स्वरूप का पूर्ण सत्य ज्ञान करने के बाद पूरी दुनिया से कहता है कि तुम्हें यदि वास्तव में अपनी रक्षा करनी है तो तुम्हें किसी की शरण में जाने की जरूरत नहीं है। तुम्हें स्वयं अपनी आत्मा की शरण में जाने की जरूरत है तभी तुम्हारा कल्याण होगा।

महावीर ही ऐसे व्यक्तित्व हैं जो अपने भक्तों को भगवान् बनने तक का मार्ग बताते हैं।

मैं भगवान् महावीर की भक्त हूँ और मेरे महावीर ने ही मुझे ऐसी शिक्षा दी है कि अपने कर्मों का नाश कर मैं स्वयं महावीर बन सकती हूँ।

आज के समय में सौभाग्य से यदि मैं महावीर बनूँ तो मैं निम्नलिखित कार्य करूंगी -

1. अज्ञानता का निवारण और महावीर राज्य की स्थापना -

सबसे पहले मेरा उद्देश्य होगा कि लोगों के अज्ञान को दूर करूँ । धर्म दर्शन को लेकर आज भी बहुत अज्ञानता है। लोग हिंसा में आज भी धर्म की कल्पना करते हैं। धर्म के नाम पर अन्यान्य पशुओं को आज भी कुर्बान किया जाता है। कई जगह तो मनुष्यों तक की बलि दे दी जाती है। दुनिया कहती है कि उसने बहुत विकास कर लिया है। लेकिन मिथ्यात्व के विकास को विकास नहीं कहते हैं। मैं यह समझाऊँगी कि बाह्य भौतिक विकास तब तक अधूरा है जब तक अंतरंग में मिथ्यात्व भरा है। मैं लोगों को धर्म का ,वस्तु का सच्चा स्वरूप समझाऊँगी और अहिंसक समाज की स्थापना करुँगी ,जहाँ कोई किसी से घृणा न करे,कोई किसी की जान न ले,कोई किसी से डरे नहीं और कोई किसी को डराये नहीं। मैं एक ऐसे समाज और राज्य को स्थापित करुँगी जहाँ प्रत्येक मनुष्य स्वतंत्र होगा ,सुखी होगा और संपन्न होगा

जहाँ जनता अणुव्रत -अहिंसा,सत्य,अस्तेय,ब्रह्मचर्य और परिग्रह परिमाण व्रत का पालन करने वाली होगी।

मैं भगवान् महावीर के अणुव्रत युक्त गणराज्य को पुनः स्थापित करुँगी जिसे लोग महावीर राज्य कहेंगे|

2. कोरे क्रिया कांड का निराकरण -

आज धर्म भी बहुत अधिक क्रिया कांड से घिर गया है। लोग अंतरंग कषायों के प्रक्षालन के स्थान पर भगवान् की मूर्ति प्रक्षालन को ही धर्म समझने लगे हैं। लोग महावीर के बाह्य वैभव के ज्यादा गीत गाते हैं , महावीर की अंतरंग लक्ष्मी की चर्चा भी नहीं करते ,मैं उन्हें उनके अंतरंग लक्ष्मी से परिचित करवाऊँगी। मैं समझाऊँगी कि बाह्य क्रियाएं भी तभी सार्थक हैं जब अंतरंग विशुद्धि भी बढ़े।

3. मिथ्या आग्रह का निराकरण -

मनुष्य वस्तु के अनंत विरोधी धर्मों को नहीं समझने के कारण बहुत आग्रही हो गया है। वह अपने अलावा दूसरों को कुछ समझता ही नहीं है। इसी कारण समाज और राष्ट्र में संघर्ष बढ़ता जा रहा है। मैं उन्हें वस्तु के अनंत विरोधी स्वरूप को समझा कर अनेकांत का दर्शन करवाऊंगी ताकि वे अपने से विरोधी विचारों का भी सम्मान कर सकें और समाज में शांति रहे।

4. स्त्री शिक्षा और सशक्तिकरण -

गर्भ में भ्रूण हत्या को मैं सबसे बड़ा पाप बता कर लोगों में जागरूकता फैलाऊंगी। इसके लिए मैं समाज में स्त्री शिक्षा और सशक्तिकरण

को बढ़ावा दूंगी। स्वतंत्रता के नाम पर समाज में अश्लीलता फैलाने वाली स्त्रियों को मैं शिक्षित करूंगी कि कम या फटे वस्त्र पहनना आधुनिकता नहीं है ,बल्कि शिक्षित होकर राष्ट्र और समाज की सेवा करना, स्वावलंबी होना और बड़ों का सम्मान करना ही अच्छी और सच्ची आधुनिकता है।

5. पर्यावरण की जागरूकता

वर्तमान में मनुष्य बहुत भोला और अज्ञानी है। वह सुख प्राप्ति की अंधी दौड़ में जिस तरह दौड़ रहा है वही उसके दुख का मूल कारण है। मनुष्य फैक्ट्री चला रहा है ,कचड़ा पैदा कर रहा है ,रहने के लिए घर और चलने के लिए सड़क बना रहा है उसके लिए पेड़ काट रहा है ,खेत उजाड़ कर बड़े बड़े कारखाने बना रहा है। वाहनों से और मनोरंजन के लिए पटाखों से जहरीला धुंआ पैदा कर रहा है। मनुष्य ने पर्यावरण को बुरी तरह रौंद दिया है। एक तरह से उसने मिथ्या सुख से जीने की जिद में अपनी मौत के सारे इंतजाम कर लिए हैं।

अब वो साफ हवा में सांस नहीं ले पा रहा है , शुद्ध पानी नहीं पी पा रहा है ,प्राकृतिक भोजन नहीं कर पा रहा है। अनेक बीमारियों के कारण मौत का शिकार हो रहा है।

ऐसी स्थिति में वह जब अपने जीवन को ही शुद्ध और सुरक्षित नहीं कर पा रहा है तो वह अपनी आत्मा को कैसे शुद्ध करेगा ? उसकी मानसिकता भी प्रदूषित हो चुकी है।

मेरा सभी जीवों को प्राकृतिक शुद्ध और सात्विक जीवन जीने का मंत्र सिखाऊंगी। स्थावर और त्रस जीवों के प्रति तथा स्वयं के प्रति उसे करुणावान बनाने का प्रयास करूंगी। ताकि मानवता सुरक्षित रहे। सभी जीव सुख को प्राप्त हों।

6.आतंकवाद का निराकरण

वर्तमान में पूरी दुनिया आतंकवाद से भयभीत है। उसका कोई स्थायी समाधान नजर नहीं आ रहा है। दुनिया को लगता है कि हिंसा से ही आतंकवाद का समाधान हो सकता है। मान्यता बन चुकी है कि सभी आतंकवादियों को मार दो तो आतंकवाद समाप्त हो जायेगा। मैं दुनिया को समझाऊँगी कि हिंसा से आतंकवाद का कभी स्थायी समाधान नहीं हो सकता ।आप एक आतंकवादी को मारते हैं तो दस नए आतंकवादी पैदा हो जाते हैं। हिंसा से आतंकवाद यदि समाप्त होता तो अभी तक हो चुका होता। लेकिन वह यथावत है। इससे पता चलता है कि हिंसा उसका एक मात्र समाधान नहीं है। हमें यह समझना होगा कि आतंकवाद ख़त्म करना है न कि आतंकवादी।

मैं अहिंसा के माध्यम से हृदय परिवर्तन का अभियान चलाकर आतंकवादियों की अवधारणा को बदल दूंगी और शांति की स्थापना करुँगी।

7. भेदभाव रहित समाज का निर्माण

मनुष्य समाज की आज सबसे बड़ी विसंगति है भेद-भाव।

जाति,रंग,भाषा,क्षेत्र आदि के आधार पर मनुष्य ने एक दूसरे के साथ भेद-भाव करना शुरू किया और आज वह और बढ़ता ही जा रहा है।

मैं सभी को अध्यात्म का रहस्य समझाऊँगी और बताऊँगी कि सभी आत्माएं समान हैं। कोई भी जीव या फिर मनुष्य व्रत संयम और तपश्चरण के माध्यम से अपने विकारी भावों को जीतकर आत्मा की विशुद्धि को प्राप्त करके अतीन्द्रिय सुख को प्राप्त कर सकता है। मैं उन्हें भेद-भाव से ऊपर उठकर भेद-विज्ञान की कला सिखलाउंगी।

मैं महावीर बनने के बाद लोगों को आत्मानुभूति का मोक्षमार्ग भी प्रशस्त करूंगी। लोगों को संसार में रहकर संसार से ऊपर उठकर रहने की कला सिखाऊँगी।

मैं वो मार्ग बतलाऊँगी जिस पर चल कर सभी मेरी तरह महावीर बन जाएं और अपनी शांत चित्त आत्मानुभूति को प्राप्त कर सदा के लिए सुखी हो जाएं।

आत्मशांति या विश्वशांति एक मात्र समाधान।
महावीर अतिवीर वीर सन्मति मेरे हैं वर्धमान।।

शुभचिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा जय जिनेंद्र गौशाला को दानराशि प्रदान

पुणे। 28 मार्च 2025, शुक्रवार – जीव दया एवं जीव संरक्षण के पावन उद्देश्य को साकार करते हुए, शुभचिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा जय जिनेंद्र गौशाला, वाकड़ में दान राशि भेंट की गई। इस पुनीत कार्य में फाउंडेशन की अध्यक्ष डॉ. नीलम जैन जी के दिशा निर्देशन में महिलाओं ने विशेष भूमिका निभाई।

गौशाला परिवार की ओर से इस उदार योगदान हेतु ट्रस्ट का आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर गौसेवा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए गौ संरक्षण और संवर्धन को समाज की प्राथमिक जिम्मेदारी बताया गया।

शुभचिंतक फाउंडेशन ट्रस्ट सामाजिक कल्याण एवं सेवा कार्यों में निरंतर सक्रिय है, और आगे भी जीव दया तथा अन्य परोपकारी गतिविधियों में योगदान देने के लिए संकल्पित है।

तीर्थंकर महावीर के सिद्धान्तों की अनुगूंज - जियो और जीने दो।

-डॉ.सुरेन्द्र जैन भारती

बुरहानपुर, जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का २६२४वां जन्मकल्याणक दिवस हम सभी साधकों के जीवन में जियो और जीने दो की अनुगूंज लेकर आया है। इसे सुनकर जीवन में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अनेकान्त, शील-ब्रह्मचर्य जैसे सिद्धान्तों को आत्मसात करना चाहिए। यह विचार अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद्के उपाध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती ने व्यक्त किये। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में तीर्थंकर महावीर स्वामी की मूर्ति पर जलाभिषेक श्री पवन जैन, अंकित जैन, अभिषेक जैन ठोलिया परिवार ने किया। शांतिधारा पाठ का वाचन डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती ने किया।

सकल जैन समाज द्वारा श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से भव्य रथयात्रा नगर के प्रमुख मार्गों पर निकाली गयी। जिसमें रथ पर जिनबिम्ब लेकर श्री महेन्द्र जैन बैठे, सारथी श्री शरद जैन बने। रथयात्रा में भजन गायक आलोक पाटौदी, ललित जैन, गौरव गंगवाल, संजय बड़जात्या आदि ने श्री वीर प्रभु आयेंगे, हम वीर गुण गायेंगे जैसे भजनों की प्रस्तुति दी। अखिल भारतवर्षीय महिला परिषद्, आदिनाथ महिला मंडल, शांतिनाथ मंडल, विबोधश्री महिला मंडल, जैन युवा मंच, श्वेताम्बर जैन नवयुवक मंडल, तेरापंथ युवक परिषद्, स्थानकवासी जैन युवा संघ आदि ने भक्तिमय वातावरण का सृजन किया।

आनंद संचेती भवन में धर्मसभा में आचार्य श्री महाश्रमण के शिष्य मुनिश्री अर्हतकुमार, मुनिश्री भरतकुमार, मुनिश्री जयदीपकुमार, आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका विबोधश्री माता जी, आर्यिका विवक्षाश्री, आर्यिका विचक्षणाश्री, आर्यिका विरक्षणाश्री, आर्यिका विसुव्रताश्री, आर्यिका विमोचनाश्री, क्षुल्लिका विभाषाश्री, क्षुल्लिका विभूषणाश्री, क्षुल्लिका विक्षमाश्री माता जी, आचार्य श्री सुन्दरसागर जी महाराज की शिष्या आर्यिका सुनयमति माता जी ससंघ के सान्निध्य में धर्मसभा हुई जिसमें आलोक पाटौदी ने मंगलाचरण किया। मुनिश्री अर्हतकुमार जी ने क्षमा, समता और सन्तोष जीवन के लिए उपयोगी तीन सूत्र बताये। मुनि

जयदीपकुमार ने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त का महत्त्व बताया। मुनिश्री भरतकुमार ने तीर्थंकर महावीर के अतुलित बल की चर्चा की। आर्यिका सुनयमती माता जी ने कहा कि तीर्थंकर की माता त्रिशला ने सोलह स्वप्न देखे और तीर्थंकर महावीर जैसा बालक पाया। हम अपने चिन्तन में महावीर को विराजमान करें। आर्यिका विबोधश्री माता जी ने आत्मा से परमात्मा बनने की यात्रा में संयम, त्याग और तप की चर्चा की तथा कहा कि इनके बिना कोई महावीर नहीं बन सकता। सभा का संचालन श्री पवन जैन ठोल्या ने किया। मुनिश्री अर्हतकुमार जी महाराज से श्री महावीर दिगम्बर जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र श्रीपाल जैन, पार्श्व ज्योति मंच के कोषाध्यक्ष श्री विमलकुमार पाटनी, जैन हैप्पी स्कूल के संस्थापक डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती ने जैनधर्म दर्शन संबंधी चर्चा की और जैन विश्वभारती वि.वि. के जैन दर्शन पाठ्यक्रम पर विमर्श किया। मुनिश्री ने डॉ. सुरेन्द्र जैन भारती की विद्वत्ता एवं लेखन की सराहना की। रथयात्रा में पूर्व विधायक ठा.सुरेन्द्रसिंह, श्री अजय रघुवंशी, शैली कीर आदि ने फूल बरसाकर रथयात्रा का स्वागत किया। धरमचन्द पाटौदी, महावीरप्रसाद पहाड़िया, पूनमचन्द बड़जात्या (मुम्बई), प्रमोद भंडारी एवं मारवाड़ी युवा मंच, विशाल सेठिया, नरेन्द्र लुहाड़िया, किरण हूमड़, रमेशचन्द सेठी, आदि ने उपस्थिति अभिव्यक्त की।

ऋषभदेव सिर्फ महापुरुष नहीं थे ,वे स्वयं वीतरागी भगवान् थे - प्रो.जयकांत शर्मा

(केंद्रीय विश्वविद्यालय दिल्ली में ऋषभदेव जन्मकल्याणक पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य आयोजन)

प्रायः ऋषभदेव को लोग एक राजा और महापुरुष के रूप में नाम लेते हैं किंतु वे सिर्फ एक महापुरुष नहीं थे, स्वयं वीतरागी भगवान् थे - यह अभिप्राय तीर्थंकर ऋषभदेव पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते हुए व्याकरणशास्त्र विभाग के वरिष्ठ आचार्य एवं श्रीमद्भागवत के व्याख्याकार आचार्य जयकांतसिंह शर्मा ने अपने व्याख्यान में व्यक्त किया।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 24/03/2025 को नई दिल्ली, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के जैनदर्शन विभाग द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्मकल्याणक के अवसर पर ऋषभदेव राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । दर्शनपीठ के अध्यक्ष प्रो. आरावमुदनजी के सान्निध्य में इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जैनदर्शन के विभागाध्यक्ष प्रो. वीरसागर जैन ने तथा संचालन प्रोफेसर अनेकांत कुमार जैन ने किया। शुभारंभ मंगलाचरण - भक्तामर स्तोत्र के छन्दों से जैन दर्शन की छात्राओं श्रुति एवं स्तुति द्वारा किया गया। तत्पश्चात प्रोफेसर अनेकांतजी ने तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के वीतरागी चरित्र एवं व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए सभी का स्वागत व अभिनंदन किया।

इसके उपरान्त मुख्यवक्ता व्याकरणशास्त्र के आचार्य प्रो. जयकांतसिंह शर्मा जी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बताया कि श्रीमद् भागवत महापुराण अपने संकल्प के आधार पर पंचम स्कंध में भगवान् ऋषभदेव का वर्णन करते हैं और उसके अनुसार इस सृष्टि के पालक सर्जक एवं संहारक जो परमात्मा हैं वही ऋषभदेव के रूप में प्रकट हुए हैं। भागवत् पुराण की दृष्टि से ऋषभदेव आचार्य व कोई महापुरुष नहीं हैं, वह स्वयं साक्षात् वीतरागी भगवान् हैं। उन्होंने बताया कि भगवान ऋषभदेव के पिता का नाम नाभि था जिनके नाम पर ही भारतवर्ष का नाम पहले अजनाभवर्ष था तथा उनके अनन्तर उनके पुत्र सम्राट चक्रवर्ती भरत के नाम पर ही आज भारतवर्ष नाम पड़ा। ऋषभदेव भगवान के चरित्र ने भगवान् लक्षण को अभिव्यक्त किया है

- अयमवतारो रजसोपप्लुतकैवल्योपशिक्षणार्थः।

(१२भागवत पुराण)

अर्थात् भगवान का यह अवतार रजोगुण से भरे हुए लोगों को मोक्षमार्ग की शिक्षा देने के लिये ही हुआ था। उन्होंने कहा कि अन्य अवतार भी हैं किंतु ऋषभदेव का महत्त्व इस बात पर उन सभी से भिन्न है कि इन्होंने लोगों को संसारचक्र से मुक्त होने के लिए मोक्षमार्ग का शिक्षण किया।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए केंद्रीय विश्वविद्यालय,त्रिपुरा के आचार्य डॉ.सुमन के.एस. ने अपना उद्बोधन देते हुए तीर्थंकर ऋषभदेव का वर्णन करते हुए कहा कि जहां ऋषभदेव ने गमन किया वो क्षेत्र ही तीर्थक्षेत्र बन गए हैं।

और इसी श्रृंखला में प्रो. आरावमुदन जी ने अपने उद्बोधन में भगवान ऋषभदेव के आध्यात्मिक व्यक्तित्व की सूक्ष्म चर्चा की।

प्रो. वीरसागर जैन ने अध्यक्षीय वक्तव्य में भगवान ऋषभदेव को प्रणाम करते हुए कहा कि जो सभी मुनियों के द्वारा व नरामरेन्द्रों के द्वारा स्मरण किए जाते हैं, जिनका वेद पुराण इत्यादि सब गुणगान करते हैं ऐसे ही ऋषभदेव को मैं अपने हृदय में विराजमान करता हूं। उन्होंने कहा कि ऋषभदेव को परम वीतरागी कहा जाता है, जो निष्काम भाव से रहता है वही शहंशाह होता है। वैदिक संस्कृति श्रमण संस्कृति के बीच जो कुछ सामान्य अंतर है यदि उन अंतरों को गौण कर दिया जाए तो जैन पुराणों में वर्णित ऋषभदेव और भागवत में वर्णित ऋषभदेव में कोई विशेष अंतर नज़र नहीं आता है।

प्रो अनेकान्त कुमार जैन ने बताया कि वैदिक और श्रमण सभी मानते हैं कि ऋषभदेव के १०० पुत्र थे किंतु जैन ग्रंथों में वर्णन मिलता है कि उनकी ब्राम्ही और सुन्दरी नामक दो पुत्रियां भी थीं, जिनको ऋषभदेव ने सर्वप्रथम युग के आरम्भ में ब्राम्ही को लिपिविद्या और सुन्दरी को अंकविद्या का ज्ञान दिया। इस देश में जो यह कहते हैं कि महिलाओं को पहले शिक्षित नहीं किया जाता था, उनको हम यह बताना चाहते हैं कि आदिनाथ ऋषभदेव ऐसे महानायक थे जिन्होंने अपनी दोनों पुत्रियों को सर्वप्रथम शिक्षा देकर सबसे पहले स्त्रीशिक्षा की वकालत की थी।

साहित्य संस्कृति संकाय एवं प्राकृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो जयकुमार उपाध्ये ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस संगोष्ठी में विभिन्न शास्त्रों के अनेक आचार्य एवं शोधछात्र उपस्थित हुए।

समाज के गौरव की बात

भारतीय संविधान की मूल प्रति पर भगवान् महावीर की दिगम्बर मुद्रिका और उनके संदेश अंकित है। जिसके लिए संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य श्री रतनलाल मालवीय का सराहनीय प्रयास रहा है समग्र जैन समाज उनकी इस पहल से गौरवान्वित है.

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन ने राजाबाजार जैन मंदिर में किये दर्शन

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन भगवान शांतिनाथ के दर्शन करने संभाजीनगर पधारे। खंडेलवाल दिगंबर जैन पंचायत पार्श्वनाथ मंदिर, राजाबाजार ने इस अवसर पर उन्हें भगवान शांतिनाथ की छवि वाला फोटो एवं शॉल भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर श्री जम्बूप्रसाद जैन ने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी 123 वर्ष पुरानी संस्था है तथा समाज को इस तीर्थक्षेत्र कमेटी का सहयोग करना चाहिए। तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना के १२५ वर्ष होने के अवसर पर 22 अक्टूबर 2026 से 22 अक्टूबर 2027 तक पूरे वर्ष रजत स्थापना वर्ष के रूप में भव्य महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी का तीर्थ सुरक्षा शिखर सम्मेलन चातुर्मास काल में प्रत्येक स्थान पर आयोजित किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि जहां भी पुराने मंदिरों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता होगी, तीर्थक्षेत्र कमेटी सहायता प्रदान करेगी।

इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, तीर्थ अनुदान समिति के अध्यक्ष श्री प्रमोद जैन कासलीवाल पंचायत अध्यक्ष श्री महावीर पाटनी, श्री सचिव प्रकाश अजमेरा, विश्वस्था एरन पाटनी, श्री महावीर ठोले, श्रीमती चंदा कासलीवाल, श्रीमती नीता ठोल, डॉ. प्रकाश पापड़ीवाल, श्री प्रकाश कासलीवाल, श्री केतन ठोल, श्री अभय कासलीवाल, श्री फूलचंद ठोले सहित अन्य महानुभाव उपस्थित थे। श्री जम्बूप्रसाद जैन ने श्री क्षेत्र कचनेर, श्री क्षेत्र जटवाड़ा जाकर प्राचीन तीर्थों के दर्शन किये और क्षेत्र का भ्रमण किया तथा जालना में आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज के भी जाकर दर्शन किये।

प्रेषक - नरेन्द्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल

राज्यस्तरीय तीर्थ संरक्षण समिति में श्री संतोष जैन पेंढारी मानद सदस्य मनोनीत: प्राचीन तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन कार्यों में मिलेगा मार्गदर्शन

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, नागपुर को जैन अल्पसंख्यक विकास आर्थिक महामंडल के राज्यस्तरीय तीर्थ संरक्षण तज्ञ (विशेषज्ञ) मार्गदर्शक समिति के मानद सदस्य पद पर नियुक्ति महामंडल के अध्यक्ष श्री ललित गांधी ने की हैं। इस समिति का कार्य महाराष्ट्र के प्राचीन जैन तीर्थक्षेत्रों का संरक्षण और संवर्धन में विषयक कार्यों को मार्गदर्शन करना हैं।

मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी

संतोष जैन पेंढारी मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी हैं। देशभर की अनेक सामाजिक, धार्मिक, संस्थाओं से जुड़े हैं। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश जैन तिजारिया, राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, जयपुर एवं सम्पूर्ण जैन समाज की अनेक शीर्ष संस्थाओं ने श्री संतोष जैन पेंढारी का अभिनंदन एवं स्वागत किया है साथ ही हार्दिक बधाइयां एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। श्री संतोष जैन पेंढारी ने अपनी नियुक्ति के लिए महामंडल के अध्यक्ष श्री ललित गांधी का आभार व्यक्त किया है।

स्वस्ति धाम जहाजपुर में दो दिवसीय जैन पत्रकार महासंघ का राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्नः बड़े तीर्थ छोटे तीर्थों को गोद लें- स्वस्तिभूषण माताजी

श्री 1008 दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र स्वस्ति धाम जहाजपुर, भीलवाड़ा में परम पूज्य गणिनी आर्यिका रत्न 105 श्री स्वस्ति भूषण माताजी ससंघ के सानिध्य में 22-23 मार्च 2025 को दो दिवसीय जैन पत्रकार महासंघ का राष्ट्रीय अधिवेशन राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया की अध्यक्षता में बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि उक्त अधिवेशन में **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जैन गाजियाबाद**, श्री महेंद्र कुमार जैन गुडवाले कोटा, पारस चैनल डायरेक्टर विनोद जैन टोरड़ी, श्रीमती उर्मिला गांधी पत्नी हंसमुख गांधी इंदौर, बिजोलिया तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री श्री नरेंद्र जैन बिजौलिया, स्वस्तिधाम क्षेत्र कमेटी के महामंत्री ज्ञानेंद्र जैन आदि पदाधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित किया।

मंगलाचरण व अतिथियों का स्वागत - मंगलाचरण डॉ कल्पना जैन नोएडा एवं सत्येंद्र जैन संगीतकार जहाजपुर द्वारा किया गया। अधिवेशन में अतिथियों का स्वागत महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेंद्र महावीर जैन सनावद, राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, राष्ट्रीय संरक्षक हंसमुख गांधी, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष दिलीप जैन, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री अकलेश जैन, राष्ट्रीय मंत्री राकेश जैन चपलमन कोटा, राष्ट्रीय प्रचार मंत्री श्री महेंद्र बैराठी, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री मनीष विद्यार्थी, श्री सुरेंद्र प्रकाश जैन, कार्यक्रम संयोजक श्री नवीन जैन जहाजपुर आदि ने किया।

तीर्थ संरक्षण में पत्रकारों की भूमिका पर प्रकाश डाला - 22 मार्च को प्रथम सत्र में तीर्थ संरक्षण में पत्रकारों की भूमिका में योगदान विषय पर प्रकाश डालते हुए मुख्य वक्ता के रूप में राजेंद्र महावीर जैन सनावद ने कहा कि तीर्थो पर बाल संस्कृति संस्कार केन्द्रों की स्थापना हो जहां पर 8 वर्ष के बच्चों को संस्कारित किया जाए, तीर्थों के माध्यम से धर्मार्थ कार्य होने चाहिए। इसके अलावा रेखा जैन इंदौर, दिलीप जैन जयपुर, राजेश पंचोली ऋषभदेव, महेंद्र बैराठी जयपुर, राजेश जैन कोटा, अभिषेक जैन रामगंज मंडी, मनीष जैन उदयपुर ,राजा बाबू गोधा, डॉक्टर कल्पना जैन नोएडा, शशांक सिंघई कोटा, आदेश सेठ गढ़ाकोटा, राजेश रागी बकस्वाहा, अकलेश जैन अजमेर, मनोज सोनी निंबाहेड़ा, विमल बज जयपुर, अतिशय क्षेत्र पदमपुरा के अध्यक्ष एडवोकेट सुधीर जैन दोसा, राजकुमार जैन कोठारी जयपुर आदि ने तीर्थ के संरक्षण में कहा कि तीर्थों पर सुरक्षा व्यवस्था होनी चाहिए, छोटे-छोटे उद्योगों की स्थापना हो, तीर्थ क्षेत्र आत्मनिर्भर बने, जैन कर्मचारी हों उनको उच्च शिक्षा मिले आदि चिंतन और मंथन हुआ।

बड़े तीर्थ को छोटे 5 तीर्थों को गोद लेना चाहिए - पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न स्वस्तिभूषण माताजी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि पत्रकार जब लिखता है तो उसे ऐसा लगना चाहिए कि किसी सागर में डुबकी लगाकर आया हो, पूज्य माताजी ने निर्भीक, निष्पक्ष पत्रकारिता पर जोर दिया, तीर्थ संरक्षण के संबंध में पूज्य माताजी ने कहा कि बड़े तीर्थ को छोटे 5 तीर्थों को गोद लेना चाहिए ताकि प्राचीनता, ऐतिहासिकता कायम रह सके, तीर्थ का संरक्षण व संवर्धन हो सके।

महासंघ जैन पत्रकारों को सम्मानित कर हितों का ध्यान रखता है - 23 मार्च को जैन पत्रकार महासंघ के परम संरक्षक विनोद जैन टोरड़ी कोटा सहित नवीन सदस्यों का सम्मान किया गया। युवा परिषद बुलेटिन, जैन गजट, श्रीफल न्यूज़ समाचार-पत्र, महासंघ का परिचय फोल्डर का विमोचन एवं विभिन्न जैन पत्र-पत्रिकाओं का विमोचन किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने महासंघ का वार्षिक प्रतिवेदन 2025 पढ़ा। रमेशजी तिजारिया ने स्वागत उद्बोधन में कहां की महासंघ जैन पत्रकारों के अपने कार्य कर रहा है, श्रेष्ठ व विशिष्ट पत्रकारों को सम्मानित करता है उनके हितों के लिए सदैव समाज में राज्य के स्तर पर प्रयास करता है।

गुल्लक योजना का प्रचार-प्रसार करें – तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री श्री हंसमुख गांधी ने कहा कि पत्रकारों का निर्भीक होकर काम करना चाहिए। संत और पंथवाद के बिना सकारात्मक व प्रमाणिक समाचार प्रकाशित करवाने चाहिए। उन्होंने तीर्थ संरक्षण में चल रही गुल्लक योजना का प्रचार-प्रसार करने पर भी जोर दिया। इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन संघ मथुरा का पाक्षिक पत्र जैन संदेश जो सर्वाधिक प्राचीन जैन समाचार पत्र होने पर अविराम कर्मयोगी जैन रत्न, समाज भूषण राजेंद्र के गोधा स्मृति जैन पत्रकारिता पुरस्कार से महासंघ द्वारा नकद राशि, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इसके

प्रदाता शैलेंद्र-निशांत गोधा समाचार जगत परिवार जयपुर है। प्रशस्ति व परिचय का वाचन दिलीप जैन जयपुर ने किया।

भारतीय संस्कृति के उन्नयन में अतुल्य योगदान - द्वितीय पुरस्कार प्रज्ञा पुंज, चतुर्थ पट्टाचार्य योगीन्द्र सागरजी की स्मृति में जैन पत्रकारिता पुरस्कार ब्र. डॉ सविता जैन अधिष्ठात्री दिगंबर जैन धर्म स्थल शीतल तीर्थ रतलाम को जैन जगत में भारतीय संस्कृति के उन्नयन एवं प्रचार-प्रसार में अतुल्य योगदान, सामाजिक क्षेत्र में लेखन, अध्ययन, मनन, चिंतन आदि कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए नकद राशि शाल व प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार प्रदाता महासंघ के परामर्श दाता डॉ. अनुपम जैन, इन्दौर परिवार।

तीर्थों के संरक्षण हेतु योगदान पर जोर - तृतीय पुरस्कार बागड़ गौरव, कलिंजरा रत्न, देहदानी श्री सोहनलाल गांधी स्मृति पुरस्कार जैन पत्रकारिता पुरस्कार से अभिषेक जैन रामगंज मंडी व राजेश जैन रागी वरिष्ठ पत्रकार बकस्वाहा, मध्यप्रदेश को नकद राशि, शाल, प्रशस्ति देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार प्रदाता हंसमुख गांधी इन्दौर परिवार। इस अवसर पर तीर्थ कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन गाजियाबाद ने तीर्थों के संरक्षण में जो कार्य किये जा रहे हैं उन पर प्रकाश डाला। शरद जैन महालक्ष्मी दिल्ली ने सभी पत्रकारों से कहा कि तीर्थों के संरक्षण में अपना योगदान दें।

विभिन्न प्रांतों से पत्रकारों की उपस्थिति दर्शनीय - कार्यक्रम का संचालन राकेश जैन चपलमन कोटा, राजेंद्र महावीर जैन सनावद द्वारा किया गया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रांतों व स्थानों से यथा जयपुर, अजमेर, कोटा, सनावद ,छतरपुर, इंदौर, गढ़ाकोटा ,ऋषभदेव, खैरवाड़ा, फलासिया, भीलवाड़ा, उदयपुर, बिजोलिया, विजयनगर, शाहपुरा, रामगंज मंडी, ललितपुर, फागी, नोएडा, दिल्ली ,बड़नगर, सागर, बंडा, शाहपुर (मप्र), फिरोजाबाद, नैनवा, बूंदी, इटावा आदि अनेकों स्थानों से पत्रकारों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल कराया। सभी उपस्थित पत्रकारों को स्वस्ति धाम समिति द्वारा सुंदर स्वस्ति धाम प्रतीक के रूप में गिफ्ट, दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम संयोजक नवीन जैन, जहाजपुर ने आभार व्यक्त किया।

तुम धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा- मुनि श्री सुधासागर जी महाराज

मुनिश्री सुधासागर जी महाराज ने बहोरीबंद अतिशय क्षेत्र में अपने प्रवचनों से लोगों को धर्म कर्म और कर्तव्यों के प्रति जागृत किया है। बुधवार को भी उन्होंने यहां धर्मसभा में कहा कि व्यक्ति यह सोच लेता है कि मेरे पास जो है उससे मैं मालामाल हूं लेकिन, जब दुनिया की तरफ् देखते हैं तो हमसे भी बड़े रईस हैं। लोगों को बड़ी उम्मीदें होती हैं अब बड़ा आदमी खड़ा हो गया है तो कुछ न कुछ तो मिलेगा लेकिन, देखने में यही आया कि देना तो दूर रहा, जो था वह भी कुचलकर चला गया। हम भूल जाते हैं कि दुनिया में हम ही जीने के लिए नहीं जन्मे हैं, वह भी जीना चाहता है, जिसे हम कुचल रहे हैं। तुम अच्छा सोचना चाहते हो तो दुनिया भी अच्छा सोचना चाहती है। तुम अच्छा खाना चाहते हो तो दुनिया भी अच्छा खाना चाहती है फिर क्यों भिखारी को बासी रोटी देते हो। जिस दिन यह सोच आ जाए कि जो भोजन मुझे अच्छा लगता है वही तो भिखारी को भी लगेगा, हम क्यों उसकी मजबूरी का लाभ उठाएं। हम क्यों बासी रोटी उसके कटोरे में डालें। एक दिन बाद देने की अपेक्षा, उसी दिन दे दो न ताजी तो ताजी भी हो जाएगी और तुरंत हो जाएगी।

तुम धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा- ये पेड़ हमें फल दें लेकिन, पेड़ को हम खाद-पानी नहीं देना चाहते तो वो फल तुम्हें पचेगा ही नहीं। यदि तुम छाया लेना चाहते हो तो पेड़ की सुरक्षा करो, प्रकृति कहती है कि छाया तुम्हें अच्छी लगती है तो पेड़ को बचाओ, उसको काटो मत। कभी भाव नहीं आता कि इससे हवा प्रदूषित हो जाएगी, हमेशा एक ही भाव कहते हो कि मुझे अच्छी हवा मिलती रहे। ये कब भाव आया है कि मैं अच्छी हवा चाहता हूं तो मेरा प्रयास रहेगा मैं हवा को गंदा नहीं करूंगा। हम सोचते है हमें पानी अच्छा मिलें, कभी हम ये नहीं सोचते कि पानी को अच्छा रखूंगा। यही स्थिति धर्म क्षेत्र में भी आ रही है, हर व्यक्ति धर्म से चाहता है लेकिन, कभी धर्म की सुरक्षा करने का भाव नहीं करता। तुम धर्म की रक्षा करोगे तो धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। जिस दिन तुम्हारा ये भाव आ जाए कि मैं धर्म की रक्षा करूंगा, पर तुम्हें अपनी रक्षा की याचना करना नहीं है, अपने आप तुम्हारी रक्षा होगी।

साधु का समय है मूल्यवान - अन्न का कण और साधु का क्षण कभी बर्बाद मत करना क्योंकि, वो मूल्यवान है। अन्न मूल्यवान है, प्राण बचाता है तो उसके कण को बर्बाद मत करना। साधु का समय भी मूल्यवान है, एक क्षण को मिले तो जीवन को धन्य कर लो। कीमती चीज ज्यादा देर संयोग में नहीं रहती क्योंकि, वो कीमती है। मैं अपने समय की कीमत करूं या ना करूं साधु का समय बर्बाद नहीं करूंगा। जितना साधु अपनी साधना में रहेगा और जो अतिशय प्रकट होगा, इसका लाभ तुम्हें मिलना है।

कैदियों को धर्मोदेश देने जेल पहुंचे मुनि श्री विरंजनसागर जी संसघ
सिपाही दनादन और संत परिवर्तन करते हैं – मुनि श्री विरंजन सागर

दुनिया संतों से मिलने आती है। पर आज संत आपसे मिलने आये हैं। और जिस स्थान पर संत आये हैं वह जगह खराब कैसे हो सकती है। और जिस स्थान पर श्री कृष्ण ने जन्म लिया हो तो फिर वह स्थान जेल मंदिर हो जाता है। यह बात जनसंत पूज्य विरंजन सागर जी महाराज ने केंद्रीय कारावास उज्जैन में बंदी भाइयों को संबोधित करते हुए कही। मुनि श्री ने प्रवचन देते हुए कहा कि इस स्थान पर कोई नहीं आना चाहता। पर मैं स्वयं अपनी इच्छा से यहां आया हूँ। आज आप और मैं दोनों कारावास में हैं। अंतर बस इतना है आपको लाया गया है। और मुझे बुलवाया गया है। और मैं यहां अपने आपसे ठीक वैसे मिलने आया हूँ जैसे श्री राम प्रभु हनुमान से मिले थे। श्री कृष्ण सुदामा से मिले थे। उन्होंने कहा बंधुओं जिस स्थान पर संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी का आशीष प्राप्त हो, उनके मंगल चरण पड़े हो वह स्थान तीर्थ के समान है बंधुओं। आज इस स्थान पर संत भी हैं जेलर भी हैं और सिपाही भी हैं। सिपाही आपको प्रहार से समझाता है और संत प्यार से समझाता है। संत और सिपाही का उद्देश्य एक ही होता है। सिपाही दनादन करते हैं और संत परिवर्तन करते हैं। उन्होंने कहा हर आदमी में परमात्मा बनने की शक्ति है। चाहे वह नन्ही चींटी क्यों न हो। जब नन्ही चींटी अपना कल्याण कर सकती है तो आप अपना कल्याण क्यो नहीं कर सकते। पाप कर्मो के उदय से जो हुआ उसे भूल जाइए और आगे की जिंदगी सुधारकर अच्छा जीवन जिये। आचार्य गुरुदेव का मंगल आशीष आप लोगों के साथ है ही। उन्होंने कहा जानता हूँ बंधन कभी किसी को रास नहीं आते। आपको घर परिवार की याद आती होगी। पर क्रोध में क्षणिक आवेश में जो हुआ अब उसे भूलकर संकल्प ले आगे प्रभु की भक्ति कर सदमार्ग चुनेंगे। आचार्य गुरुदेव ने हथकरघा अभियान से इस जगह को तीर्थ बना दिया है। इस स्थान पर सभी जाति वर्ग के लोग एक साथ रहकर भक्ति भाव से परिवार की तरह रहते हैं निश्चित यह तीर्थ नहीं महातीर्थ है। उन्होंने कहा बंधुओं यहां आपके सुधार और आंगे के जीवन के लिए आचार्य गुरुदेव के आशीष और प्रयास से हथकरघा उद्योग चल रहा है। इसलिए यह जगह जेल नहीं सुधारगृह है। जिस दिन मानव का मन परिवर्तन की राह पर आ जाता है उस दिन मानव को परमात्मा स्वीकार कर लेता है। । संतों के चरण आशीष देने पड़ते हैं फिर संतों के चरण से आपके आचरण कैसे न बदलेंगे। अतः उन्होंने कहा पहले तन से जो हुआ वो भूल जायें पर अब अपने मन को सुधार लेना। आचार्य विद्यासागर जी महाराज की वाणी को आत्मसात कर लेना। उनकी कृपा को स्वीकार कर लेना। आप सभी का जीवन उज्ज्वल हो। परिवार में सुख शांति रहे। यहां से बाहर जाकर अच्छा जीवन जिये। इस सजा को सजा न समझकर जीवन और परमात्मा की भक्ति का मजा ले। ऐसा आशीष है। उक्त जानकारी श्री अनुज जैन सेठ एवं श्री हर्ष जैन इंदौर ने दी।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के तत्वावधान में चंदेरी (म.प्र.) में पत्रकार सम्मेलन का सफल आयोजन संपन्न

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र के आगामी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष की ओर आगे बढ़ते हुए अशोक नगर मध्य प्रदेश के चंदेरी तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोग से २ —३ अप्रैल २०२५ को जैन पत्रकार सम्मेलन ''अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ'' द्वारा आयोजित किया गया।
इस सम्मेलन में प्रात: स्मरणीय वंदनीय आचार्य श्री १०८ विद्या सागर जी महामुनिराज के सुयोग्य सरल स्वभावी शिष्य मुनि श्री १०८ महा सागर जी मुनिराज का परम सान्निध्य प्राप्त हुआ।

उन्होंने देश भर से आए जैन पत्रकारों को आह्वाहन करते हुए कहा कि आज प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से तेज सोशल मीडिया सभी को जैन समाचार पहुंचा रहे है, यहां देश भर के पत्रकार एकत्रित हुए है और यह कहना सही होगा कि आज सोशल मीडिया ज्यादा एक्टिव हो गया है पत्रकारों को अपनी जिम्मेदारियों का पूरी गंभीरता के साथ निर्वहन करना होगा, आज जैन समाज में कहीं कोई घटना होती है उसे चैनल महालक्ष्मी तुरंत ही पूरे देश में ही नहीं, विदेश में भी पहुंचा देता है। इसी तरह की पत्रकारिता आज जैन समाज में आवश्यक है। मुनि श्री ने कहा कि गोताखोर जितनी ऊंचाई से पानी में कूदता है वह उतनी ही ज्यादा गहराई में जाता है, इसलिए जैन पत्रकारों को संसार की ऊंचाई में पहुंचने की बहुत कोशिश नहीं करनी चाहिए। पूरे जैन समाज का आह्वाहन करते हुए उन्होंने कहा कि आज

सरकार हमारी गिनती ४४—४५ लाख की ही गिनती है जबकि हम स्वयं को एक करोड़ भी मान ले तो भी उसमें दिगम्बर जैनों की संख्या पचास लाख तो होगी ही और वर्तमान में प्राचीन तीर्थो की सुरक्षा बहुत बड़ा प्रश्न बन गया है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक योजना को आधार बनाकर अगर सभी जैन भाई एक छोटा सा ही संकल्प ले लें कि अपने प्राचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार के लिए कम से कम ५० लाख जनसंख्या को मानते हुए न्यूनतम १ रुपया प्रतिदिन दान राशि निकलेगा तो यह राशि ५० लाख प्रतिदिन के अनुसार वर्ष भर में लगभग १८० करोड़ होती है और यह राशि अलग अलग संस्थाओं के स्थानों पर तीर्थो के जीर्णोद्धार में लगी एक मात्र संस्था में जमा करवाई जाए, जो कि वर्तमान में भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी है। मात्र ५ वर्षों में यह राशि ७०० करोड़ से ऊपर पहुंच जाएगी जिससे हमारे सभी प्राचीन तीर्थो का जीर्णोद्धार आसानी से हो जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि समाज अब भी नहीं जागा तो ३०—४० वर्षो में ही जैन संस्कृति का इस पंचम काल में कुछ समय के लिए विलोप हो जाएगा।

उन्होंने पत्रकारों व समाज के लिए कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला, इस पत्रकार सम्मेलन की अध्यक्षता तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्वाध्यक्ष श्री सुधीर जी सिंघई ने की, संयोजक मध्यांचल के आंचलिक अध्यक्ष श्री डी. के. जैन, इंदौर रहे तथा मंचासीन श्री शैलेन्द्र जैन एडवोकेट, अलीगढ़, डॉ. अखिल बंसल, जयपुर, श्री प्रदीप जैन, रायपुर तथा श्री संतोष जी घड़ी सागर ने महत्वपूर्ण जानकारियां व सुझाव दिए।

श्रीमती मीनू जैन, गाजियाबाद ने शुरुआती सत्र में तीर्थ क्षेत्र कमेटी की स्थापना, उद्देश्य, प्रमुख उपलब्धियों एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी की आगामी योजनाओं से अवगत कराया तथा कमेटी द्वारा समय—समय पर तीर्थो के संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास के लिए किये गए तथा किए जा रहे कार्यो के विषय में अवगत करवाया।

चैनल महालक्ष्मी के शरद जैन ने तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जम्बूप्रसाद जी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी जी तथा १२५वें स्थापना वर्ष समिति के अध्यक्ष श्री जवाहर लाल जैन जी द्वारा घोषित विभिन्न अपेक्षाओं व सूचनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि इस दिशा में २२ अक्टूबर २०२७ तक लगभग १० पत्रकार सम्मेलनो

का आयोजन किया जाएगा और समापन समारोह में पत्रकारों को प्रोत्साहन के रूप में ५१०००, ३१०००, २१००० हजार रुपए के प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार तथा १० सांत्वना पुरस्कार २१०० रु प्रत्येक के दिये जाएगें। कुल मिला कर लगभग सवा लाख रुपए की राशि के पुरस्कार पत्रकारों को दिए जाएंगे, यही नहीं न्यूनतम पांच मौलिक लेख अथवा मौलिक रील बनाने वाले प्रत्येक पत्रकार को अभिनंदन पत्र भी दिया जाएगा।

सभी पत्रकारों ने विभिन्न विषयों पर तीर्थ सुरक्षा को आधार मानते हुए श्री शरद जैन ने सम्मेलन के समापन पर निम्न बिंदुओं पर प्रकाश डाला।

- पंचकल्याणको में ५ से १० प्रतिशत की राशि प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार के लिए रखी जानी चाहिए।
- चातुर्मास में तीर्थ संरक्षण के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी के सहयोगार्थ एक अलग कलश की स्थापना करनी चाहिए।
- हर जिनालय में तीर्थ क्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखी जानी चाहिए।
- प्राचीन तीर्थों पर प्रभावशाली संतों के चातुर्मास आयोजित किए जाने चाहिए।
- सभी तीर्थों पर एक शिलालेख लगवाना चाहिए कि यह तीर्थ भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से संबंधित है
- चातुर्मास के दौरान उपस्थित संतों के सान्निध्य में तीर्थ संरक्षण से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- तीर्थ क्षेत्र कमेटी सिद्ध क्षेत्र व अतिशय क्षेत्रों के क्राइटेरिया स्पष्ट करें।
- तीर्थ क्षेत्रो के मसले सुलझाने के लिए सुयोग्य वकीलों का एक पैनल बनाना चाहिए जो नि:शुल्क सेवा प्रदान कर सकें।
- तीर्थों को जीवंत रखने के लिए उनके साथ औषधालय व विद्यालय खोले जाने चाहिए।
- तीर्थों को अपने सभी डॉक्यूमेंट यथाशीघ्र पूरे कर लेने चाहिए तथा हर तीर्थ की बाउंड्रीबॉल जरूरी होंताकि हमारे तीर्थ सुरक्षित रह सकें।
- तीर्थ यात्राएं समय समय पर कराकर ही हम तीर्थो को सुरक्षित बना सकते है।
- श्रावकों को तीर्थ क्षेत्र कमेटी के लिए पारिवारिक सुख दुख के अवसरों पर दानों की घोषणा की जानी चाहिए।
- तीर्थ क्षेत्र कमेटी के पूर्व अध्यक्ष सुधीर सिंघई जी ने कहा कि पत्रकार ही समाज को, सरकार को, प्रशासन को , इन सबको चेता सकता है। ऐसे सम्मेलनों में, भटकाव की ओर बढ़ रहे समाज के राष्ट्रीय मुद्दे उठाने चाहिए। समाज को सही रास्ते पर लाना है। पिछले ७० सालों से अधिक केवल तीर्थ क्षेत्र कमेटी ही मुकदमो को लड़ते हुए, अपने तीर्थ को बचाने में सफल खड़ी हुई है । मुनिश्री आर्य नंदी महाराज जी ने गुरु आज्ञा का पालन करते हुए हजारों किलोमीटर पैदल चलकर तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए, इन मुकदमों को लड़ने हेतु बहुत बड़ा सहयोग दिया है।

उन्होंने जोर देकर कहा कि जब तक हम संतवाद, पंथवाद में हम सिंघई, गोयल, पालीवाल, कासलीवाल, नैनार, अग्रवाल आदि में बंटते रहेंगे तब तक ऐसे ही छिन्न–भिन्न रहकर हम अपनी संस्कृति को बचा नहीं पाएंगे। हम जैन नहीं है ,तुम पारिख हो, शाह हो। अपना उदाहरण देते हुए बताया कि हमारे बाबा ११ भाई थे, पिताजी पांच भाई, हम चार भाई, हमारे दो बेटे, वो भी बाहर, अब कैसे कह दूं कि मैं जैन हूं। वोटो की राजनीति इस कदर हावी हो रही है कि आने वाले समय में हमारी बहू बेटियों की इज्जत बचाना भी मुश्किल हो जाएगा। हम इतिहास से सबक नहीं लेते। आज नाम में, धर्म में जैन नहीं लिखते, तो ध्यान रखना हम २० लाख भी गिनती नहीं पहुंचा पाएंगे ।अब बातें बहुत कर ली , कुछ करके दिखाना होगा।

धरा बेच देंगे, चमन बेच देंगे,
गगन बेच देंगे, ये कलम के पुजारी
अगर सो गए तो, इस देश के नेता वतन बेच देंगे।

- मध्यांचल के अध्यक्ष श्री डी के जैन जी इंदौर ने जानकारी दी कि वर्तमान में विभिन्न घरों से अनुपयोगी सामग्री एकत्रित करके आज १० लाख की राशि एकत्रित कर तीर्थों के जीर्णोद्धार में लगा

दी है और अब इसी कड़ी में इंदौर के १००० घरों में इस योजना को शुरू करने की योजना है। इस अवसर पर विभिन्न पत्रकारों ने भी अपने सुझाव इस सम्मेलन के माध्यम से रखे।

- श्री जिनेश कोठिया जी ने कहा कि ऐसा नहीं है कि सरकार से सहयोग नहीं लिया जा सकता, हमें मेहनत करनी पड़ेगी और थोड़ी कठिनाई भी है, पर असंभव नहीं। आहार जी तीर्थ के लिए तीन करोड रुपए सहयोग लिया जा चुका है और अब नैनागिरी के लिए प्रोजेक्ट रिपोर्ट सरकार के पास सौंपने की तैयारी है।
- श्री सुरेंद्र कुमार जी भगवां ने कहा की तीर्थों के संरक्षण के लिए आज आर्थिक सहयोग हेतु , तीर्थ क्षेत्र कमेटी के हाथ मजबूत करने होंगे। १९१४ में एक निर्देशिका बनाई गई थी, लेकिन उसके बाद कोई कार्य नहीं हुआ। बलभद्र जी द्वारा बनाई गई अनोखी जानकारी पुस्तक पर भी आगे कार्य होना चाहिए।
- डॉक्टर श्री सुशील जैन जी ने कहा कि जैन संविधान, जैन फेडरेशन और जैन आचार संहिता बननी चाहिए । जैन संस्कृति की सुरक्षा के लिए शिलालेखों को लिखकर जमीन में गड़वाना होगा। लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक व जैन दर्शन की भी शिक्षा जरूरी है।
- श्री विकास जैन, बानपुर ने कहा कि तीर्थों को जीवंत करने के लिए उनके साथ विद्यालय भी खुले, जैसा इस अवसर पर आहार जी में संस्कारशाला, बच्चों को संस्कारित करने के उद्घाटन किया गया। उन्होंने कहा कि बानपुर में जब उन्होंने स्कूल खोला, तब वहां के लोगों ने कहा कि अगर यह स्कूल ना खोला होता तो जैनों को मार दिया होता, क्योंकि हमें जैनों के कार्यों के बारे में जानकारी ही नहीं थी। उन्होंने स्पष्ट यह भी कहा कि आप जिनालयों के पास जहां भी शिक्षालय खोलेंगे, मैं उसमें पूरी सेवा दूंगा और मुझे उसके लिए एक पैसा भी नहीं चाहिए।
- श्री विजय जी ने कहा कि तमिलनाडु में लगभग सभी तीर्थों ने बाउंड्री वॉल बना रखी है और उस कारण ही वे आज सुरक्षित है। अन्य क्षेत्रों में इस पर अगुवाई करनी चाहिए । प्रतिमाओं के फोटोग्राफ प्रशस्ति आदि की पूरी रिकॉर्ड को मेंटेन करना चाहिए। दान व्यवस्था के लिए डिजिटाइजेशन होना आवश्यक है।
- श्री श्रेयांश जैन जी ने कहा कि स्थानीय कमेटियों में टीम पावरफुल होनी चाहिए। तीर्थक्षेत्र कमेटी का एक कार्यालय दिल्ली में भी खोलना चाहिये जिससे अधिक सफलता कार्यों में प्राप्त की जा सकती है। तीर्थों की कमेटियों को प्रबंधन में आ रही कमियों को दूर करने की आवश्यकता है।
- श्री नरेंद्र कुमार जैन जी ने कहा कि सभी साधुओं से अनुरोध किया जाए कि पंचकल्याणको में ५ से १० फीसदी राशि पुराने तीर्थों के संरक्षण के लिए रखी जाए, आगे के तीर्थ भी तभी बच पाएंगे। हमें श्वेतांबरों भाइयों से भी इस बारे में सीख लेनी होगी। पुराने तीर्थों की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए, पूरे रिकॉर्ड रखे जाएं। सिद्ध और अतिशय श्रेत्रों के क्राइटेरिया व मानक बनाई जाए।
- संपादक संघ के अध्यक्ष शैलेंद्र जैन जी ने कहा कि हम कई जगह कैस जीत चुके, पर उन्हें लागू कौन कराए? चाहे वह केसरिया जी हो, चाहे गिरनार जी हो, आज अचल तीर्थों से पहले हमें जिनालयों में जाने वाले इंसानों को तैयार करना होगा , तभी हमारे जिनालय सुरक्षित रह पाएंगे ।
- डॉक्टर श्री अखिल जैन जी ने कहा कि वर्तमान में पत्रकारों की उपयोगिता और सहभागिता बहुत जरूरी हो गई है। उनका हमें पूरा सदुपयोग तीर्थों के संरक्षण में करना चाहिए ।
- श्री अक्षत जैन ने कहा कि बुंदेलखंड में करोड़ों के मूल्य से तीर्थ बन रहे हैं। पुरातत्व के बोर्ड हट नहीं रहे हैं, जिससे उनका विकास नहीं हो पा रहा। **हमें हर तीर्थ पर बोर्ड लगाने चाहिए कि संबंधित तीर्थ भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी से संबंधित है।**
- श्री जयेंद्र जैन निप्पु ने कहा कि श्रम शक्ति और धन तीनों का उपयोग करना होगा। युवा नौकरियां के लिए भटक रहा है। अपना वर्चस्व बनाना होगा । तीर्थ यात्रायें करनी होगी। बच्चों को संस्कार देने होंगे। पूजा, अभिषेक तीर्थ पर करें। तीर्थ क्षेत्र पर पहुंचे। अब बोलने कर नहीं, कुछ कर कर दिखाना होगा।
- श्री संदीप जैन ने दो पंक्तियों से शुरुआत की कि (सियासत का मसीहा ही जुआरी हो गया ,जो शराबी था, वह मूर्तियों का पुजारी हो गया।) आज केंद्र से हम क्या उम्मीद करें, हमें खुद ही अपना वर्चस्व प्राप्त करना होगा। मिलकर कुछ काम करना होगा।
- दैनिक विश्व परिवार के संपादक प्रदीप जैन जी ने कहा कि तीर्थ क्षेत्र कमेटी और पत्र संपादक संघ ने मिलकर, जो एक होकर यह रास्ता चुना है, यह सफलता के नए कदम चूमेगा, कमेटियों के पदाधिकारी नियमित कार्यक्रम करें।
- साधु संत चातुर्मासों में तीर्थ सुरक्षा कलश की स्थापना करें। जब भी घरों में सुख के या दुख के कार्यक्रम होते हैं, उनमें तीर्थ क्षेत्र कमेटी के लिए दान घोषित किया जाता है, वह तीर्थ क्षेत्र कमेटी को दिया जाए। अपने–अपने क्षेत्र के मंदिरों में तीर्थ क्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखी जाए, उसमें किसी का हिस्सा ना हो, वह केवल तीर्थों

के जीर्णोद्धार के लिए हो। आज हम साधुओं के आहार, विहार की समस्या देख रहे हैं, तीर्थ क्षेत्र कमेटी इसका एक प्लेटफार्म तैयार करें और वह विश्वस्त होना चाहिए।

❖ श्री राजकुमार घाटे जी इंदौर ने कहा कि युवा शक्ति बहुत दूर है, एक सम्मेलन युवाओं के लिए दिल्ली, बेंगलुरु आदि में भी किया जाना चाहिए। आई टी सेक्टर की टीम बननी चाहिए। उनमें भी जागृति लानी होगी। अपनी सही गिनती बताकर अपनी शक्ति दिखाएं।

❖ श्री शांति कुमार पाटिल ने कहा कि सभी कमेटी के कार्यों में सहयोग करें। अल्पसंख्यक आयोग के लिए कागज पूरे कर कर दे। हम झगड़ा होने के बाद कागज ढूंढने लगते हैं। युवा जुड़ेंगे तो तीर्थ सुरक्षित रहेंगे ।वहां धार्मिक शिविरों का आयोजन होना चाहिए, विद्यालय होने पर तीर्थ जीवंत रहते हैं। तीर्थ यात्राएं निकाले। तीर्थों पर जन्म उत्सव आदि करें।

❖ डॉक्टर श्री मनोज जैन निर्लिप्त ने कहा कि पुराने शास्त्रों का पुन: प्रकाशन, संरक्षण भी होना चाहिए। पुराने तीर्थ के संरक्षण, तीर्थ के स्वामित्व दस्तावेज भी पूरे होने चाहिए। अगर वह किसी पारिवारिक नाम पर है, तो वह तीर्थ क्षेत्र कमेटी के नाम कर दिए जाएं। अपने तीर्थ पर अन्य मतवालंबियों की घुसपैठ को रोक ,जैनत्व के संस्कार आवश्यक है।जैनों का संख्या बल आज जरूरी है। हमें भाव हिंसा नहीं करनी, पर अपनी सुरक्षा के लिए विरोधी हिंसा करने से रुकना नहीं चाहिए।

❖ श्री राजीव जैन जी ने कहा कि अवैध अतिक्रमण, तोड़फोड़ की रिपोर्टिंग करनी होगी। घटना को उजागर कर प्रशासन तक पहुंचाना होगा। सरकार, प्रशासन पर न्याय के लिए दबाव बनाना होगा। तीर्थों के लिए जागरुकता जरूरी है। तीर्थयात्रियों व स्थानीय लोगों को शिक्षित करना होगा । तीर्थ की प्राचीन स्थापत्य कला को उजागर करना होगा । पुरातत्व के बोर्ड अगर हैं, तो वह लगे रहने चाहिए। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए जागरूकता, वृक्षारोपण जल संरक्षण, शुद्ध पेयजल, शौचालय की व्यवस्था, धार्मिक पर्यटन, डिजिटाइजेशन ऑनलाइन जागरूकता, स्थानीय समुदायों की भागीदारी, जैव विविधता का संरक्षण पर भी हमको ध्यान में रखना होगा।

❖ श्रीमती कल्पना जैन जी ने हर परिवार में णमोकार जाप पर जोर दिया, सड़कों पर अपनी शक्ति दिखानी होगी मंदिरों में हो रही बोलियां का १० फीसदी तीर्थ सुरक्षा के लिए रखना चाहिए। घरेलू तथा मन्दिरों में रखी जाने वाली गुल्लक योजना का प्रचार करना होगा । संतों के भी संबोधन की आवश्यकता है । तीर्थों को गोद लेने की प्रेरणा देनी होगी। युवाओं और बच्चों को जोड़ें, उनको सम्मानित कर उत्साह वर्धन करें। यह काम पत्रकारों को आगे बढ़कर करना होगा। पाठशाला में उन्हें जोड़ना होगा।

❖ दो दिवसीय पत्रकार सम्मेलन का संचालन भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से चैनल महालक्ष्मी के शरद जैन ने बखूबी किया। उन्होंने अपने संबोधन में स्पष्ट रूप से कहा कि आज जब समाज संतवाद पंथवाद में बंट रहा है, वहीं पत्रकार भी अपने–अपने अलग–अलग घटकों में बटेंगे तो समाज का उद्धार नहीं हो पाएगा। जब तीर्थ की सुरक्षा, उनके संरक्षण, संवर्द्धन एवं विकास की बात हो, जब तीर्थ क्षेत्र कमेटी की अगुवाई में आगे चलने की बात हो, सभी पत्रकारों को अपने भेद मिटाकर, हम सबको एक साथ होकर आगे आना होगा। आज इस पत्रकार सम्मेलन में अगर ६१ पत्रकार विभिन्न राज्यों से आए हैं, अगले पत्रकार सम्मेलनों में यह संख्या १०० से ऊपर होनी चाहिए और दसवें सम्मेलन तक हमें ३०० पत्रकार एक स्थान पर इकट्ठे होकर, अपनी ताकत को प्रदर्शित करना होगा, क्योंकि अगर लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है ,तो वह जैन समाज के लिए भी एक मजबूत स्तंभ ही साबित होगा। आज विभिन्न तीर्थों पर जो दिक्कतें आ रही है, उनकी आवाज उठाने में पत्रकार अपनी कलम को तलवार बनाकर आगे ला सकता है, पत्रकार अगर अपनी शक्ति का सही उपयोग करें, तो वह दिन दूर नहीं जब हम समाज में विखंडता को दूर कर सकते हैं, संतों से अनुरोध कर सकते हैं। यह मंजिल दूर हो सकती है, पर असंभव नहीं। जब इस ओर कदम बढ़ाए जाएंगे ,मिलकर बढ़ाएंगे, तो हर मुश्किल आसान हो सकती है। पूजनीय मुनि श्री महासागर जी का भी बहुत–बहुत धन्यवाद और नमोस्तु अर्पित करता हूं क्योंकि उन्होंने तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से मेरे एक अनुरोध पर सहर्ष अपनी उपस्थिति ही नहीं दी, बल्कि पत्रकारों को वह उद्बोधन दिया, जिससे वे समाज को एक सही रास्ते पर प्रशस्त कर सकेंगे। उनका उद्बोधन सभी के लिए प्रेरक बनेगा यही आशा करता हूं।

तीर्थ क्षेत्र कमेटी की तरफ से इस सफल प्रथम जैन पत्रकार सम्मेलन के आयोजन के लिए अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ का हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए मुनि श्री के चरणों में नमोस्तु निवेदित किया गया। सम्मेलन के पश्चात् भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा सभी उपस्थित पत्रकारों को पुस्तक व उपहार प्रदान कर सम्मानित किया गया। अगला सम्भावित सम्मेलन रायपुर में १६ व १७ अगस्त को, तत्पश्चात् अगला सम्मेलन १२ व १३ अक्तूबर को **आचार्य श्री प्रमुख सागर जी के सान्निध्य** में करने की संभावित योजना की रूपरेखा तैयार की।

नवकार महामंत्र केवल एक मंत्र नहीं है, यह हमारी आस्था का मूल है- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नई दिल्ली के विज्ञान भवन में नवकार महामंत्र दिवस का उद्घाटन किया और इसमें भाग लिया। सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने नवकार मंत्र के गहन आध्यात्मिक अनुभव पर प्रकाश डाला, तथा मन में शांति और स्थिरता लाने की इसकी क्षमता पर जोर दिया। उन्होंने शांति की असाधारण भावना पर टिप्पणी की, जो शब्दों और विचारों से परे है, तथा मन और चेतना के भीतर गहराई से प्रतिध्वनित होती है।

मोदी ने नवकार मंत्र के महत्व को रेखांकित किया, इसके पवित्र छंदों का पाठ किया तथा मंत्र को ऊर्जा के एकीकृत प्रवाह के रूप में वर्णित किया, जो स्थिरता, समता और चेतना और आंतरिक प्रकाश की सामंजस्यपूर्ण लय का प्रतीक है। अपने व्यक्तिगत अनुभव पर विचार करते हुए उन्होंने साझा किया कि कैसे वे अपने भीतर नवकार मंत्र की आध्यात्मिक शक्ति को महसूस करते रहते हैं। उन्होंने वर्षों पहले बेंगलुरु में इसी तरह के सामूहिक जाप कार्यक्रम को देखने को याद किया, जिसने उन पर एक अमिट छाप छोड़ी। प्रधानमंत्री ने देश और विदेश में लाखों पुण्य आत्माओं के एक एकीकृत चेतना में एक साथ आने के अद्वितीय अनुभव पर प्रकाश डाला। उन्होंने सामूहिक ऊर्जा और समन्वित शब्दों पर टिप्पणी की, तथा इसे वास्तव में असाधारण और अभूतपूर्व बताया।

गुजरात में अपनी जड़ों पर टिप्पणी करते हुए, जहाँ हर गली में जैन धर्म का प्रभाव स्पष्ट है, प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे, छोटी उम्र से ही उन्हें जैन आचार्यों की संगति में रहने का सौभाग्य मिला। उन्होंने जोर देकर कहा, "नवकार मंत्र केवल एक मंत्र नहीं है, बल्कि आस्था का मूल और जीवन का सार है।"

उन्होंने इसके महत्व को रेखांकित किया, जो आध्यात्मिकता से परे है, व्यक्तियों और समाज का समान रूप से मार्गदर्शन करता है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि नवकार मंत्र का हर छंद और यहाँ तक कि हर शब्दांश भी गहरा अर्थ रखता है। उन्होंने कहा कि मंत्र का पाठ करते समय, व्यक्ति पंच परमेष्ठी को नमन करता है और उसी पर विस्तार से बात की। मोदी ने कहा कि अरिहंत, जिन्होंने "केवल ज्ञान" प्राप्त किया है और "भव्य जीवों" का मार्गदर्शन करते हैं, 12 दिव्य गुणों को धारण करते हैं, जबकि सिद्ध, जिन्होंने आठ कर्मों को मिटा दिया है, मोक्ष प्राप्त किया है, और आठ शुद्ध गुणों से युक्त हैं। उन्होंने कहा कि आचार्य महाव्रत का पालन करते हैं और 36 गुणों को अपनाकर पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, जबकि उपाध्याय 25 गुणों से समृद्ध मोक्ष मार्ग का ज्ञान प्रदान करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि साधु तपस्या के माध्यम से खुद को परिष्कृत करते हैं और मोक्ष की ओर बढ़ते हैं, जिसमें 27 महान गुण होते हैं। उन्होंने इन सभी पूज्य प्राणियों से जुड़ी आध्यात्मिक गहराई और गुणों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा, "आत्म-विजय व्यक्ति को अरिहंत बनाती है", उन्होंने कहा कि नवकार मंत्र कोई मांग नहीं बल्कि एक मार्ग है - एक ऐसा मार्ग जो व्यक्ति को भीतर से शुद्ध करता है और उसे सद्भाव और सद्भावना की ओर ले जाता है।

प्रधानमंत्री ने कहा, "नवकार मंत्र वास्तव में मानव ध्यान, अभ्यास और आत्म-शुद्धि का मंत्र है", इसके वैश्विक परिप्रेक्ष्य और इसकी कालातीत प्रकृति पर प्रकाश डालते हुए, जो अन्य भारतीय मौखिक और शास्त्र परंपराओं की तरह, पीढ़ियों से चली आ रही है - पहले मौखिक रूप से, फिर शिलालेखों के माध्यम से, और अंत में प्राकृत पांडुलिपियों के माध्यम से - आज भी मानवता का मार्गदर्शन कर रही है। उन्होंने जोर देकर कहा, "नवकार मंत्र, पंच परमेष्ठी की वंदना के साथ-साथ सही ज्ञान, सही धारणा और सही आचरण का प्रतीक है, जो मुक्ति का मार्ग है।"

आ. विद्यासागर जी, विद्यानंद जी, वर्धमानसागर जी का भक्त, जिनागम पालक, प्रभावक 57 वें दिन हो गया समाधिस्थ:

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

पचास साल इंदौर की अदभुत राष्ट्रीय हस्ती जो मुख्य रूप से दिगंबर जैन समाज के तीर्थों की रक्षा के लिए बनाई गई थी। वह देश के जैन समाज की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी राष्ट्रीय धरोहर है भारतवर्षीय दिगंबर तीर्थक्षेत्र कमेटी, बम्बई। उसके प्रथम अध्यक्ष दानवीर माणिकचन्द्र बने। उनके बाद इंदौर के इन्द्र भवन के निर्माता सर सेठ हुकुमचंद जी जैन ने इस ऐतिहासिक तीर्थक्षेत्र कमेटी को नई ऊँचाईयों तक पहुंचा दिया था। आपने ही महात्मा गांधी को इन्द्र भवन में भोजन के लिए आमंत्रित किया था, जो सोने की थाली में परोसा गया था। भोजन से पहले गांधी जी की शर्त स्वीकार हुई और थाली की आमदनी से दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए संस्था की स्थापना हो गई थी। सन् 1960 के लगभग ग्राम बिनौला, चित्तोड़ राजस्थान से एक नवयुवक नाम रतनलाल का ज्ञानार्जन के लिए इंदौर में सर सेठ सरुपचंद हुकुमचंद दिगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय के प्रचार्य पं. बंशीधर जी शास्त्री न्यायालंकार से मिलना हुआ। उसके अनुरोध स्वीकार करते हुए आवास की व्यवस्था दिगंबर जैन उदासीन आश्रम में हो गई थी। सेठ हुकुमचंद जी के साथ में तत्व चर्चा करने वाले विद्वानों के साथ शंका-समाधान का अवसर इस युवक को भी मिला। हुकुमचंद सेठ के द्वारा तत्वचर्चा के लिए इन्द्र भवन परिसर में स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगंबर जैन चैत्यालय में युवक बाद में पण्डित श्री रतनलाल जी शास्त्री होकर अपने स्वाध्याय और अर्जित ज्ञान तथा प्रवचन के दम पर 46 साल तक जिनागम के ग्रंथों की प्रभावना जीवन के अंतिम समय जारी रही है।साथ ही आपकी शास्त्रसभा श्री दिगंबर जैन उदासीन श्राविकाश्रम ट्रस्ट कंचनबाग, इंदौर के नंदीश्वर द्वीप-पंचमेरू मंदिर व सभाग्रह में भी जारी रही है।

निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने पण्डित जी के प्रति कहा: ज्ञान प्राप्त करने के संबंध में कुंदकुंद स्वामी ने कहा है कि चारित्र के साथ जीवन व्यतीत करना। ज्ञान का फल चारित्र होना चाहिए। विद्वान के पास ज्ञान के साथ चारित्र हो जाय, तो सोने में सुहागा माना जाता है। आज बहुत दुर्लभ देखा जा रहा है, ज्ञान तो विद्वानों के पास है लेकिन विद्वानों का प्रतिमा लेने का,संल्लेखना लेने का भाव नहीं होता। समाधि धारण करने का भाव नहीं होता। बहुत सारे विद्वान असंयमी होकर मर रहे हैं। हमारे आचार्य महाराज विद्यासागर जी ने एक बार श्रुतपंचमी के दिन वाचना समापन के दिन पूछने पर कहा था। क्या आशीर्वाद है आपका ? मेरी तो एक ही भावना है जिस विद्वान ने ज्ञान की इतनी सेवा की है, जिनवाणी की रक्षा की है, भारत का हर विद्वान प्रतिमा व्रति बनकर के समाधिपूर्वक समाधिमरण करें। यही मेरी भावना है। यह कह कर आचार्यश्री बहुत खुश हुए थे। कितने ही ज्ञानी हो जाएं, आचार्यश्री कुछ नहीं मानते। वे कहते थे कि इतना ज्ञान-ध्यान करने के बाद कम से कम दो प्रतिमा तो ले लों। विद्वान बारह व्रत लेकर के नहीं मरेगा तो क्या मूर्ख, अज्ञानी मरेंगे ? क्या ये व्रत-प्रतिमाएं, संयम मूर्खों की है। अगर मूर्ख व्रत लेंगे ? पण्डित लोग कहते हैं मुनि ऐसे होते हैं। हमने एक दिन फटकार दिया। अगर पण्डित लोग मुनि बनेंगे, तो ऐसे मुनि बनेंगे, तो ही जैनधर्म उठेगा। क्योंकि वे विद्वान हैं। आगम के ज्ञाता हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि पंचमकाल में बहुतायत विद्वान बिना प्रतिमा लिए, बिना समाधिमरण के जा रहे हैं। लेकिन बहुत गर्व के साथ कहना है पण्डित जी साहब रतनलाल जी आज भारत में सिद्धांत के ज्ञाता विद्वान था। पण्डित रतनलाल जी इंदौरवाला सिद्धांत का बहुत बड़ा ज्ञाता था। पूरा गोम्मटसार गहन कण्ठस्थ, लब्धिसार कण्ठस्थ। सब कुछ कण्ठस्थ। जैनागम का बहुत बड़ा ठोस विद्वान था। पूरी जिंदगी व्रत पालन किए। आश्रम में रहते थे। आश्रम में रहकर के पढ़ाने में कभी थकते नहीं थे। सुबह चार बजे से शुरु हो जाते थे। दिन में क्लास, जितना पढ़ना हो पढ़ो। आज वो व्रतों के साथ लगभग एक हफ्ते से मेरे सम्पर्क में चल रहे थे। बार-बार वहां से ब्रह्मचारी अशोक भैया, अनिल भैया, अभय भैया और भी तीन-चार थे। वे लोग वहां से हमारे से किसी न किसी प्रकार से सम्बोधन दिलवाते थे। प्रतिदिन वह पण्डित जी एक ही बात कहते थे। अनंत-अनंत कोटी-कोटी नमोस्तु। बस हमारे लिए वो दिन कब आए, ऐसी शक्ति आ जाए कि मैं महाव्रत धारण कर सकूं। कल-परसो शाम को सम्बोधन दिया। बहुत जाग्रत अवस्था में थे। 57 दिन की सल्लेखना थी। हमारे महाराज निर्णयसागर जी महाराज वहां पहुंच गए थे। उनकी सन्निधि में उनके सामने ही उनका बहुत अच्छा आदर्श समाधिमरण हुआ। व्रतों के साथ, दस प्रतिमा के साथ पण्डित रतनलालजी का आदर्श मरण हुआ। पूरी चर्या पालन की। एक बार भी चर्या में कोई दोष नहीं लगाया। पूर्ण जाग्रति के साथ सम्बोधन में जाग्रत थे। परसों शाम को वो बोल रहे थे और हम सम्बोधन कर रहे थे। दस प्रतिमाओं के साथ कल रात ग्यारह बजे के लगभग उन्होंने अपना पार्थिव, नश्वर शरीर आरपार से विसर्जन किया। सभी विद्वानों के वे आदर्श बनें। विद्वान लोग ऐसी सल्लेखनाओं से आदर्श बनें। सभी विद्वान

प्रतिमा लेकर, बारह व्रत लेकर समाधिपूर्वक मरण धारण करें। यही उनसे हमें शिक्षा लेना चाहिए। जीवन भर उन्होंने ज्ञान-ध्यान-चारित्र का पालन किया। पण्डित जी साहब के लिए मेरी भावना है की वह जल्दी से जल्दी ऐसे क्षेत्र में जन्म लें जहां पर वे शीघ्र मुनि व्रत धारण करके मोक्ष को प्राप्त करें। क्योंकि अभी उनका व्रतों के साथ मरण हुआ है। संयम के साथ मरण हुआ है, तो नियम से आगम के अनुसार उनको स्वर्ग ही मिला है। क्योंकि वह सम्यक दृष्टि थे। प्रतिमाधारी, दस प्रतिमाधारी सल्लेखनापूर्वक मरण करनेवाला जीव नियम से ही गृहस्थ स्वर्ग ही जाता है। ऐसा रत्नकरण श्रावकाचार में व्रतों का फल में लिखा हुआ है। पूज्यवर समंतभद्र महाराज ने लिखा है कि बारह व्रतों का फल क्या है ? स्वर्ग मिला है। अभी वे स्वर्ग जाएंगे। वहां से क्षय होकर जल्द मुनि बनकर के मोक्ष जाएं, यही मेरा आशीर्वाद है।यही उनके प्रति सदभावना है।

धर्म प्रभावक प्रखर मुनि श्री प्रमाणसागर जी की भावाभिव्यक्ति:

रात्रि के ग्यारह बजे पूर्ण जाग्रति के साथ रत्नत्रय के आराधक और पालक इंदौर के पण्डित रतनलाल जी ने अपनी देह का परित्याग किया। नियमित सम्पर्क में थे। सभी महाराजों का उनको आशीर्वाद भी मिल रहा था। हम लोग उन्हें रोज सम्बोधन पहुंचा रहे थे। कल उन्होंने अपनी इस काया का विसर्जन किया भेद विज्ञान के साथ। मैं यह कहूंगा उन्होंने जीवन भर जिनवाणी की आराधना की, संयम की आराधना की। उसका उत्तम फल उन्होंने प्राप्त कर लिया। आचार्य समयसागर जी महाराज के द्वारा उन्हें दस प्रतिमा के व्रत और आत्मानंदसागर नाम दिया गया था। वाकय में वह आत्मानंद के सागर में रूप में जीवित थे। वे जहां भी हैं, मैं यह भावना भाता हूं कि वे इसी तरह रत्नत्रय का अनुकरण करते हुए अपने जीवन का पथ प्रशस्त करें। एक आदर्श हम सबके बीच छोड़कर गए हैं। मैं सभी त्यागी और विद्वतजनों से चाहूंगा कि वे भी उनके मार्ग का अनुशरण करें।

गुरु आज्ञा से सल्लेखना सम्पन्न कराई मुनिश्री निर्णयसागर जी ने:

सल्लेखना की साधना में लीन साधक श्री आत्मानंदसागर जी ने 28 मार्च 2025 शुक्रवार चैत्र कृष्ण 14 के दिन दस प्रतिमाओं के व्रत ग्रहण करने के साथ उपवास किया। किए। चार दिन दो बार जल ग्रहण किया। एक अष्टमी और एक चौदस निर्जल उपवास किया। मुनिश्री निर्णयसागर जी के चरणों का पाद प्रक्षालन किया। आपने 25 वर्ष पूर्व संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी से सागर जिले के ग्राम टडा में दो प्रतिमा व्रत पालन का संकल्प ग्रहण किया था। श्रावकाचार में वर्णित चर्या का पालन किया। छपकराज श्री आत्मानंदसागर जी शुक्रवार 2 अप्रैल रात 11 बजे उत्कृष्ट परिणामों के साथ 'ओम शब्द' उच्चारित करते हुए समाधिस्थ हो गए। गुरुवार 3 अप्रैल 2025 की प्रात:काल में 8 बजे से आपका डोला कंचनबाग स्थित समवशरण दिगम्बर जैन मंदिर रवाना होकर गोमट्टगिरी पहुंचा , जहां अंतिम संस्कार विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

मुनिश्री निर्णयसागर जी का संस्मरण पण्डित जी के प्रति:

शरीर से आत्मा को भिन्न मानना बड़ा दुर्लभ होता है, जो ऐसा मानता है, उसे शाश्वत पण्डित कहा है। इसे मानने वालों में एक विद्वान, मनीषी पण्डित रतनलाल जी शास्त्री इंदौर के हुए हैं। जिन्होंने जैनधर्म के शास्त्रों का सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया और दूसरों को पढ़ाया। उन्होने द्वारा जो अध्ययन किया और पढ़ाया, उससे सैकड़ों मुनि, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणियों ने मुनि और आर्यिका पद को प्राप्त किया और अपना कल्याण कर लिया। उन्होंने सिर्फ पाया ही नहीं अपने जीवन के अंतिम पढ़ाव में 91 वर्ष की उम्र में जब उनको भयंकर रोग शरीर में हो गया था, डॉक्टर ने उनको मना कर दिया था, रोग का उपचार ही नहीं है। तब फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी। अपने निर्मल मन की आराधना के बल पर 14 दिन तक उन्होंने भोजन का त्याग करके मात्र ऐसी भीषण गर्मी में जल के माध्यम से बीच-बीच में निर्जल उपवास करते हुए अपने शरीर का परित्याग किया। जब हमको आचार्य समयसागर महाराज का संदेश मिला, तो 120 किमी चलकर के खातेगांव से 8 दिन की बजाय 4 दिन में ही इंदौर आ गए। पणिडित जी से हमारी चर्चा हुई। ऐसा लग रहा था कि वास्तव में, वाकय में इन्होंने सही तरिके से जिनवाणी की आराधना की है। 700-800 पृष्ठीय ग्रंथ पदमपुराण आदि का सात दिन में स्वाध्याय कर लिया करते थे। बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान करना उनके लिए चुटकियों का काम था। ऐसे पण्डित जी ने वीर मरण किया है। हम उनकी जितनी तारीफ करें, कम है। दुनिया के विद्वानों के लिए अनुकरणीय और प्रशंसनीय है। पण्डित जी ने मेरे को भी छोटे से ग्रंथ से लेकर गोमट्टसार जैसे महान पुराण का अभ्यास कराया था। हमेशा मुनि बनने की प्रेरणा प्रदान की। उनकी भी अंतिम समय तक मुनि बनने की भावना रही। शरीर की स्थितियों को देख कर के उन्होंने दसवीं प्रतिमा को लेकर के साधुओं तक की ऊंचाइंयों को प्राप्त किया। समता भाव से शरीर का परित्याग करके स्वर्ग वासी हो गए।

बड़ौत के पं. श्रेयांशप्रसाद जी की पण्डित जी से तत्व चर्चा:

समाधि से दस दिन पहले पण्डित श्रेयाशप्रसाद जी, बड़ौत (जिला-बागपत), का श्री दिगबंर जैन श्राविका आश्रम, कंचनबाग, इंदौर सल्लेखना स्थल पहुंचना हुआ। पण्डित जी से हुई तत्वचर्चा के बारे में आपने बताया—"पण्डित रतनलाल जी इंदौर वालों से मेरी विशेष तत्व चर्चा हुई। उसके अंतर्गत उन्होंने भक्त प्रत्याखान ग्रहण करने की हमसे चर्चा चर्चा की और बताया कि मैंने 90 दिन का नियम लिया है और 45 दिन हो गए हैं। क्रम-क्रम से सब छोड़ता चला जा रहा हूं। मेरे आयु कर्म का जो भी परिणमन होगा वह दे:व-शास्त्र-गुरु की साक्षी में होगा। 45 दिन शेष हैं। इसमें इस नश्वर शरीर का परित्याग भाव है। ऐसा उन्होंने चर्चा के दौरान बताया। मैंने उनके सामने एक बात रखी कि आपको तत्वाभ्यास है और जिनवाणी का गहन स्वाध्याय है। जिनवाणी के वचनों में सामर्थ्य है कि व्यक्ति किसी भी प्रकार की व्याधि, दु:ख, जन्म, मरण के रोग समापन हो जाता हैं। आत्मा को एक विशेष सम्बल मिल जाता हैं। इसलिये पण्डित जी आप हमेशा तत्व-चिंतन करते हुए अपना शेष समय व्यतीत करें।

जिनवाणी के प्रभावक, आराधक पण्डित जी साहब के प्रति निर्मलकुमार पाटोदी

हर किसी से चर्चा के बाद 'ओम नम:' बोलने वाला सदा के लिए स्वर्गवासी हो गया। कहा गया है 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' वह उक्ति जिस महामना के जीवन से जीवंत हुई, उसने इंदौर में रह कर के जीवन के अंतिम समय तक

जैनागम के ज्ञान भण्डार की भरपूर प्रभावना की है। जो कुंदकुंद की शाशवत् परम्परा का संवाहक सिद्ध हुआ। जिसने स्वामी समंतभद्राचार्य द्वारा प्रतिपादित धर्म प्रभावना को चरितार्थ कर दिया। वह और कोई नहीं, मुनि, ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियों तथा श्रावकों को जैनागम का भरपुर स्वाध्याय करा कर ज्ञानार्जन प्रदान करके उनके जीवन को मोक्षमार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता रहा। आपके कारण न जाने कितनी भव्य आत्मा मुनि और आर्यिकाएं बन गए। जन्म ग्राम बिनौला, जिला चित्तौड़गढ़, राजस्थान में पाकर सर सेठ हुकुमचंद जी के साथ तत्वचर्चा करने वाले मनीषी विद्वानों के साथ स्वाध्याय, शंका-समाधान करने का आपको दीर्घकाल तक अवसर मिला। पं. बशीधर शास्त्री न्यायालंकार जो इंदौर के सर सेठ सरुपचंद हुकुमचंद दिगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य थे। आपने इंदौर में आने के बाद उनके समक्ष सर्वप्रथम ज्ञानार्जन की इच्छा प्रकट की। जो स्वीकार भी हो गई। आपकी गणना देश के प्रमुख शास्त्रीय विद्वानों में रही है। आपने सभी पंथों के साधुओं की समभाव से सेवा की। सभी संतगणों का आपको आशीर्वाद था। आपने तीर्थराज सम्मेदशिखर जी की 108 वंदना का संकल्प 16 साल पहले ही पूरा कर लिया था। इसके बाद भी बीस तीर्थंकरों की सिद्ध भूमि तीर्थराज की वंदना जारी रखी।

सम्मेदशिखरजी पर्वतराज के चौपड़ाकुण्ड जैसे उतुंग स्थल पर पण्डितजी ने श्रीमती चन्द्रप्रभा बाई मोदी महिला रत्न की तीव्र पुण्य भावना को देखते हुए साधु, साध्वी, त्यागी-व्रति और श्रावकों को वंदना करने में सुविधा हो, इस पुण्य भावना 10 लाख रुपए से विश्रामालय का निर्माण कराने में योगदान दिया। यहां दर्शन के लिए वेदी का निर्माण करा कर तीर्थंकर भगवंतों की मूर्तियां विराजमान करवा दी। इस धर्म स्थल के दायित्व का निर्वाह चन्द्रप्रभा जी के पुत्र भरत जी मोदी ने बहुत ही कुशलता से किया। पण्डित जी रतनलाल जी इंदौर के विजयनगर स्थित सर्व सम्पन्न श्री दिगम्बर जैन पंच तथा बालयती मंदिर ट्रस्ट के अंतिम समय तक अध्यक्ष रहें। जिनवाणी का आराधक, प्रभावक आप पण्डित रतनलाल जी शास्त्री निस्पृह, निराभिमानी, निश्छल, सहज, सरल जिनवाणी के सच्चे पथिक थे। आप पुरे जीवन आचार्य श्री विद्यासागर जी के संतत्व की महती प्रभावना करते रहे। सम्मेदशिखर जी और गिरनार जी तीर्थराज पर समाज का अधिकार हो, इस भावना से मेरे माध्यम से आप भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बन गए। कंचनबाग स्थित समवशरण मंदिर के सभागृह में तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए सहयतार्थ आपकी अध्यक्षता में इंदौर समाज की बैठक हुई थी। आपके प्रयास और आशीर्वाद से लाखों रुपए एकत्र हुए। आपके उल्लेखनीय योगदान के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी, बम्बई ने सराहना पत्र मेरे पास प्रेषित किया था। एक बार मैं आपके रात्रि प्रवचन के समय पहुंचा तो आपने प्रवचन रोककर सम्मेदशिखर जी के संबंध में चर्चा की थी। मंदिर परिसर में श्राविकाश्रम की अधिष्ठात्री बाई साहब लीलाबाई के चौके में आपक भोजन करते थे। एक बार वहां भी आपके भोजन करते समय मों पहुंचा तीर्थरक्षा संबंधी समस्या पर पर आपने पूरे मनोयोग से मुझसे चर्चा की थी तथा सम्बन्धित साहित्य प्रमाण स्वरूप मुझे उपलब्ध किया। ऐसे ही प्रसंग इन्द्र भवन के स्वाध्याय कक्ष में हुए। हर कार्यक्रम के अंत में आप आचार्यश्री विद्यासागर जी का जयकारा अवश्य लगाते थे। ऐसे अंतर्बोध दुर्लभ समाधि के धारक की स्मृति स्वरूप मस्तक स्वयं श्रद्धा से, अंत:करण से नतमस्तक है।

भगवान महावीर के बारे में किसने क्या कहा:-

- निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

महात्मा गाँधी : मैं आप लोगों से यह विश्वास पूर्वक कहूँगा कि महावीर स्वामीका नाम इस समय यदि किसी भी सिद्धांत के लिये पूजा जाता है, तो वह है:-'अहिंसा'...मैं आप लोगों से विनती करता हूँ कि आप महावीर स्वामी के उपदेशोंको पहचाने, उन पर विचार करें और उसके अनुसार आचरण करें।

आचार्य श्री विद्यासागर:

महावीर अपने नाम के अनुरूप वर्द्धमान थे। वे अपनी आत्मा मेंनिरंतर प्रगतिशील थे। वर्द्धमान चारित्र के धारी थे। पीछे मुड़ कर देखना या नीचेगिरना उनका स्वभाव नहीं था। वे प्रतिक्षण वर्द्धमान और उनका प्रतिक्षण वर्तमानथा।अपने विकारों पर विजय पाने वाले अपने आत्म स्वरूप को प्राप्त करने वालेवे सही मायने में महावीर थे।

लोकमान्य पं. बाल गंगाधर तिलक :

यहाँ पर मुझे एक आवश्यक बात प्रगटकरना है। वह यह है कि अनुमान ५००-६०० वर्ष पहिले जैन धर्म और ब्राह्मण धर्मइन दो धर्मों का तत्व सम्बन्धी झगड़ा मच रहा था। मतभेदों तथा विचारांतरों केकारण एक मौक़ा था। एक जीतता है और दूसरा हारता है। इसी में मतभेद होताहै। जैनियों के अहिंसा परमो 'धर्म:' इस उदार सिद्धांत ने ब्राह्मण धर्म पर चिरस्मरणीय छाप डाली है। पूर्व काल में यज्ञ के लिये असंख्य पशु हिंसा होती थी,इसके प्रमाण मेघदूत काव्य तथा मेरे भी अनेक ग्रंथों से मिलते हैं। रतिदेव राजा नेयज्ञ किया था, उसमें इतना प्रचुर पशु वध हुआ था कि नदी का जल ख़ून से रक्तवर्ण हो गया था। उसी समय से उस नदी का नाम चर्मवती प्रसिद्ध है ...इस घोरहिंसा का ब्राह्मण धर्म से विदाई ले जाने का श्रेय पुण्य जैनों के हिस्से में है।

डॉ. रवीन्द्रनाथ ठाकुर :

महावीर ने भारत में मोक्ष का संदेश दिया कि धर्म ही सच्चाईहै, यह मात्र सामाजिक परम्परा नहीं है। और यह भी कि मोक्ष की प्राप्ति सच्चे धर्मकी शरण लेने से होती है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद :

मैं अपने को धन्य मानता हूँ कि मुझे महावीर स्वामी के प्रदेश मेंरहने का सौभाग्य मिला है। अहिंसा जैनों की विशेष सम्पत्ति है। जगत के किसी भीअन्य धर्म में अहिंसा सिद्धांत का प्रतिपादन इतनी सफलता से नहीं मिलता।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें स्थापना वर्ष की तैयारी

प्राचीन अग्रवाल दिगम्बर जैन पंचायत दिल्ली के सौजन्य से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के १२५वें स्थापना वर्ष के उपलक्ष्य में महावीर जयंती के पावन अवसर पर लाल किला मैदान दिल्ली में पूज्य आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज एवं आचार्य श्री श्रुत सागर जी महाराज ससंघ के मंगल सान्निध्य में तीर्थ रक्षा संकल्प ज्योति महोत्सव का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वप्रथम श्रीमती नीलम जैन ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम का शुंभारम्भ किया। तत्पश्चात् श्री चक्रेश जैन, अध्यक्ष प्राचीन दिगम्बर जैन पंचायत लाल मन्दिर, श्री विजेन्द्र जैन महामंत्री दिल्ली पंचायत, श्री कैलाशचन्द जी जैन, मैनेजर दिगम्बर जैन नया मन्दिर धर्मपुरा, श्री पुनीत जैन मैनेजर दिगम्बर जैन लाल मन्दिर, श्री नीरज जैन सेक्रेटरी दिगम्बर जैन लाल मन्दिर, श्री कुलदीप जैन, श्री जवाहरलाल जैन, अध्यक्ष उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड अंचल, श्री शरद जैन सान्ध्य महालक्ष्मी, श्री प्रवीण जैन, श्रीमती मीनू जैन आदि द्वारा चित्रानवरण एवं दीप प्रज्जवलन श्री जिनेन्द्रकुमार जैन मैनेजर दिगम्बर जैन मन्दिर कुंचा सेठ के द्वारा किया। स्वागताध्यक्ष श्री राजीव जैन का श्री दिगम्बर जैन पंचायत लाल मन्दिर जी कमेटी द्वारा सम्मान किया गया। सान्ध्य महालक्ष्मी के निर्देशक श्री शरद जैन ने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्रों की योजनाओं तथा तीर्थों के संरक्षण तथा पुराने तीर्थो के जीर्णोद्धार के विषय में सभा को अवगत कराया।

सर्वप्रथम आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज ने महावीर जन्मकल्याणक पर्व के महत्व को बताया दिगम्बर जैन चल अचल तीर्थों के महत्व को बताते हुए श्रावक श्राविकाओं को तीर्थों के प्रति श्रद्धान व दर्शन वन्दना के प्रति जागृत किया। परम पूज्य भावलिंगी सन्त जीवन है, पानी की बूंद महाकाव्य के रचयिता, प्राकृत भाशा के विद्वान आचार्य श्री विमर्श सागर जी महाराज जी ने अपने प्रवचन में बताया कि जो भी श्रावक श्राविकाएं प्राचीनतम तीर्थो की वन्दना को जाते हैं उसे तीर्थ वन्दन का पुण्य प्राप्त होता है। साथ ही साथ उसे तीर्थंकर के कुलवंश में पैदा होने का भी गौरव प्राप्त होता है एवं तीर्थों की संरक्षण की गंभीरता को समझाते हुए सभी श्रावकों को तीर्थों के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भारत के समस्त तीर्थक्षेत्रों के महत्व को प्रकाशित करने का कार्य एकजुटता से कर रही है। हमें अपने तीर्थों की रक्षा के लिए जागरूक रहना होगा। तीर्थों की वन्दना करने से मिथ्यात्व का गलन होकर, असंयम के भाव संयम के रूप परिवर्तित होने लग जाता है। तीर्थों की वन्दना करने से अपरिग्रह के भाव आते है और लगता है निर्ग्रंथ मुनि मुद्रा को धारण कर लें। हमें तीर्थों के प्रति समाज में तथा आने वाली पीढ़ी में जागरूकता पैदा करनी है। तीर्थ हमारे तीर्थंकर की मुद्रा तप त्याग का संदेश देते है। तीर्थों की सुरक्षा संकल्प ज्योति हमारे और जन–जन के हदृय को आलौकित करें और हम एक दूसरे के लिए हमेशा प्रेम भाव के साथ सहयोग करते हुए अपना जीवन जी सकें। तीर्थों की सुरक्षा की श्रृंखला में श्री मुकुल जैन सितारे वाले, श्री राजेश जी जैन काका, श्री विनोद कान्ता जैन कृष्णानगर दिल्ली द्वारा ५१,०००रू. की घोषणा की गई। श्री धनेन्द्र–सविता जैन, पटपड़गंज दिल्ली–९१ द्वारा ११,००० की घोषणा की। इस कार्यक्रम में दिल्ली के अनेकों महानुभव उपस्थित रहें। लाल मन्दिर दिल्ली के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री नीरज जैन तथा प्रबंधक श्री पुनीत जैन का विशेष सहयोग रहा। ५० तीर्थ क्षेत्रों के विशाल चित्र लगाये गये जिन पर सभी मन्दिरों के पदाधिकारियों एवं प्रमुख महानुभावों ने ''तीर्थ रक्षा संकल्प ज्योति'' दीप का प्रज्जवलन कर अर्घ समर्पित किया।

आचार्य श्री विमर्श सागर जी ने ऐतिहासिक लाल किला मैदान से त्रिदिवसीय तीर्थंकर महावीर स्वामी जन्म कल्याणक महोत्सव के अवसर पर चल अचल तीर्थों की सुरक्षा, संरक्षण व संवर्द्धन के लिए सात सूत्रीय फार्मूला प्रस्तुत किया।

१. पंचकल्याणकों में ५–१० प्रतिशत राशि प्राचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार के लिए निकालनी चाहिए।
२. चार्तुमास में तीर्थक्षेत्र संरक्षण कलश की स्थापना करनी चाहिए। हर तीर्थक्षेत्र/समस्त दिगम्बर जैन मन्दिर को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का सदस्य होना चाहिए।
३. सभी तीर्थक्षेत्रों पर एक शिलालेख लगवाना चाहिए कि यह तीर्थ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से संबंधित है।
४. सभी तीर्थक्षेत्रों को अपने तीर्थों की बाउण्ड्रीवाल जरूर बनवानी चाहिए तथा सभी तीर्थक्षेत्रों को अपने तीर्थों के दस्तावेजों को सुरक्षित जरूर रखना चाहिए।
५. भारतवर्ष के समस्त दिगम्बर जैन मन्दिरों/तीर्थों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक रखवाना।
६. समय–समय पर तीर्थ यात्राएं करके ही हम तीर्थों को सुरक्षित बना सकते है।
७. तीर्थों पर जाकर कभी भी तीर्थों की शिकायत का भाव नहीं लाना चाहिए, हमें कोई कमी महसूस हुई है तो हमें स्वयं कुछ अपने साथियों के सहयोग से तीर्थक्षेत्र को समृद्ध बनाने का प्रयास करना चाहिए।

पिछले अंक से शेष सम्बद्ध तीर्थों की सूची............

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

उत्तर प्रदेश के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

1) श्री प्राचीन तीर्थ श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चन्द्रवाडजी, फिरोजाबाद

बिहार के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

1) भगवान १००८ शीतलनाथ जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी भद्दलपुर, चतरा

मध्य प्रदेश के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

1) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पार्श्वगिरि ट्रस्ट, भगवाँ, छतरपुर

महाराष्ट्र के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

1) श्री प्रज्ञाश्रमण दिगम्बर जैनाचार्य देवनंदी ट्रस्ट (णमोकार तीर्थ), नासिक
2) श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जिन मंदिर, शिरोल
3) श्री सर्व सुखदायक श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन तीर्थक्षेत्र पार्श्वगिरि ट्रस्ट, नंदुरबार
4) श्री १००८ चन्द्रनाथ स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर संस्थान, खोलापुर
5) श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कास्बावाल्बे, कोल्हापुर

गुजरात के सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों की सूची

1) श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र, कलोल, गांधीनगर

Tirth Kshetra's of Karnataka

1) श्री क्षेत्र मोक्ष मंदिर दिगम्बर जैन मठ, लक्कवल्ली, शिमोगा
2) श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मंदारगिरि, तुमकुर

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गोलक योजना के अंतर्गत रखी गयी गोलकों में से निम्नलिखित क्षेत्रों/मंदिरों से अब तक प्राप्त राशि

क्र.	क्षेत्र / मंदिर का नाम	गोलक क्र.	प्राप्त राशि
1	श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र दिगम्बर जैन मंदिर, बरेली (उप्र.)	गोलक क्र. 01	56,750/- रू
2	श्री बड़ी मूर्ति दिगम्बर जैन मन्दिर रायगंज, अयोध्या (उ.प्र.)	गोलक क्र. 02	1,36,100/- रू
3	श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, शास्त्री नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 03	16,343/- रू
4	श्री ऋषभदेव दिगम्बर जैन मन्दिर नन्दग्राम, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 04	6,000/- रू
5	श्री वीर दिगम्बर जैन मन्दिर समिति, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 05	2,771/- रू
6	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर समिति, वसुन्धरा गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 06	4,170/- रू
7	श्री1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर शालीमार, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 09	18,400/- रू
8	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, कवि नगर गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 10	46,100/- रू
9	श्रमण श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन सभा, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 11	5,000/- रू
10	श्री दिगम्बर जैन टैम्पल सोसाइटी (रजि.) रेलवे रोड़ घंटाघर, गाजियाबाद (उ.प्र)	गोलक क्र. 12	79,130/- रू
11	श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर राजनगर एक्सटेंशन, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 13	19,152/- रू
12	श्री दिगम्बर जैन समिति, सूर्य नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)	गोलक क्र. 14	3,950/- रू
13	श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर जैन नगर पंचवटी, गाजियाबाद	गोलक क्र. 15	1,100/- रू
14	श्री1008 भगवान पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, जैन मोहल्ला,शामली (उ.प्र.)	गोलक क्र. 18	8,200/- रू
15	श्री 1008 भगवान महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर, तालाब रोड़, शामली (उ.प्र.)	गोलक क्र. 19	38,350/- रू
16	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर निर्माण विहार (दिल्ली)	गोलक क्र. 20	71,375/- रू
17	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर अमीन नगर सराय जिला बागपत (उ.प्र.)	गोलक क्र. 21	40,011/- रू
18	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर बलबीर नगर (दिल्ली)	गोलक क्र. 22	23,000/- रू
19	श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ऋषभ विहार (दिल्ली)	गोलक क्र. 24	41,440/- रू
20	श्री देव पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरी नैनागिरि छतरपुर (म.प्र.)	गोलक क्र. 38	41,100/- रू
21	श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, राजस्थान	गोलक क्र. 43	2,66,867/- रू
22	श्री पद्मपुरा जी अतिशय क्षेत्र, राजस्थान	गोलक क्र. 44	1,10,000/- रू
23	श्री वासुपूज्य दिगम्बर जैन मन्दिर, गांधी नगर, (दिल्ली)	गोलक क्र. 46	4,950/- रू

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गोलक योजना में सहयोगी उपरोक्त सभी क्षेत्रों/मंदिरों के ट्रस्टियों / पदाधिकारियों के प्रति भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हैं। एवं भारत के समस्त दिगम्बर जैन तीर्थों एवं विभिन्न नगरों, शहरों के प्रतिष्ठित दिगम्बर जैन मंदिरों से अपील है कि आप भी अपने-अपने क्षेत्र/मंदिर जी पर एक गोलक तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से अवश्य रखवाएं जिससे तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन एवं उनके सम्मुनित विकास में कमेटी को संबल प्राप्त हो सके।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री

हंसमुख जैन गाँधी
चेयरमेन - गोलक योजना समिति

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi April 2025
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.